
राज
कॉमिक्स विशेषांक
संख्या 0177
स्वयंवर
बांकेलाल
RAJ COMICS
राज कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
बेदी

स्वयंवर

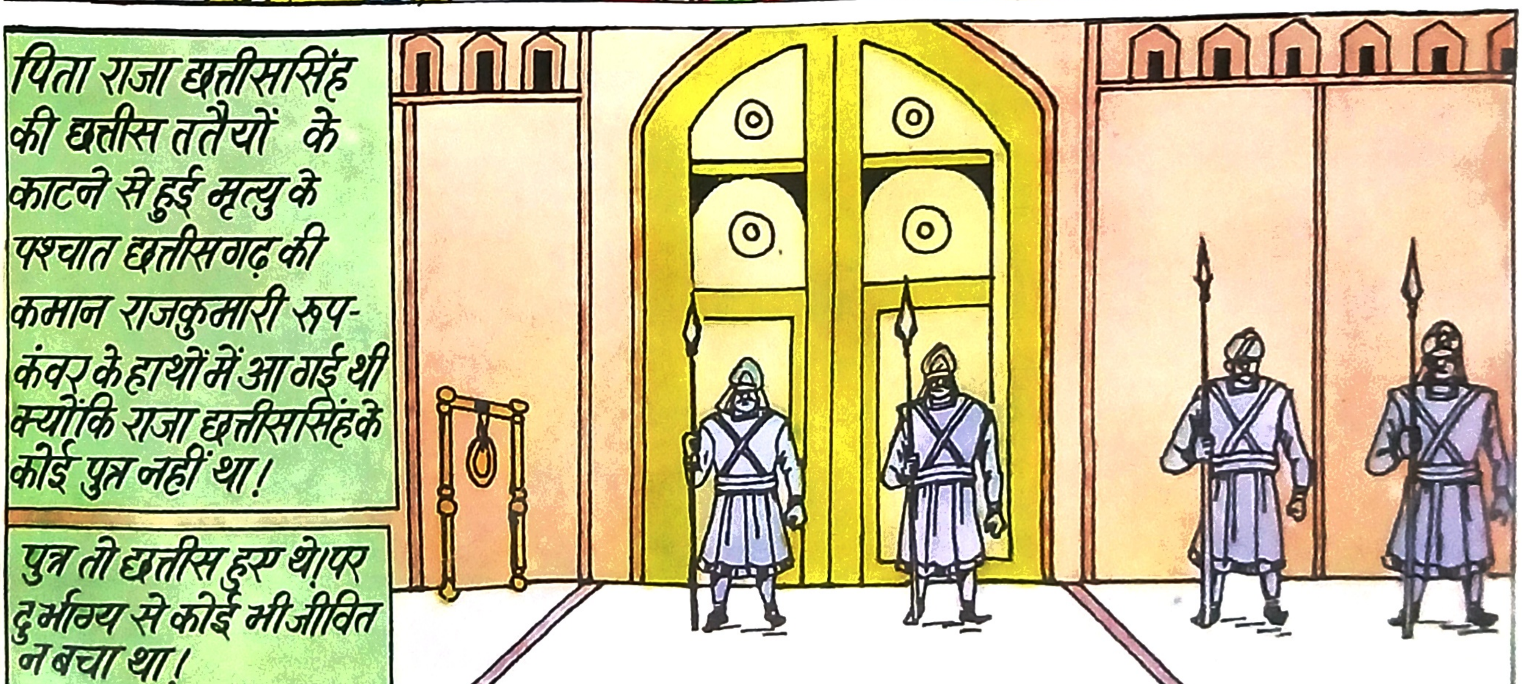
लेखक: तरुणकुमारवाही संपादन : मनोज गुप्ता



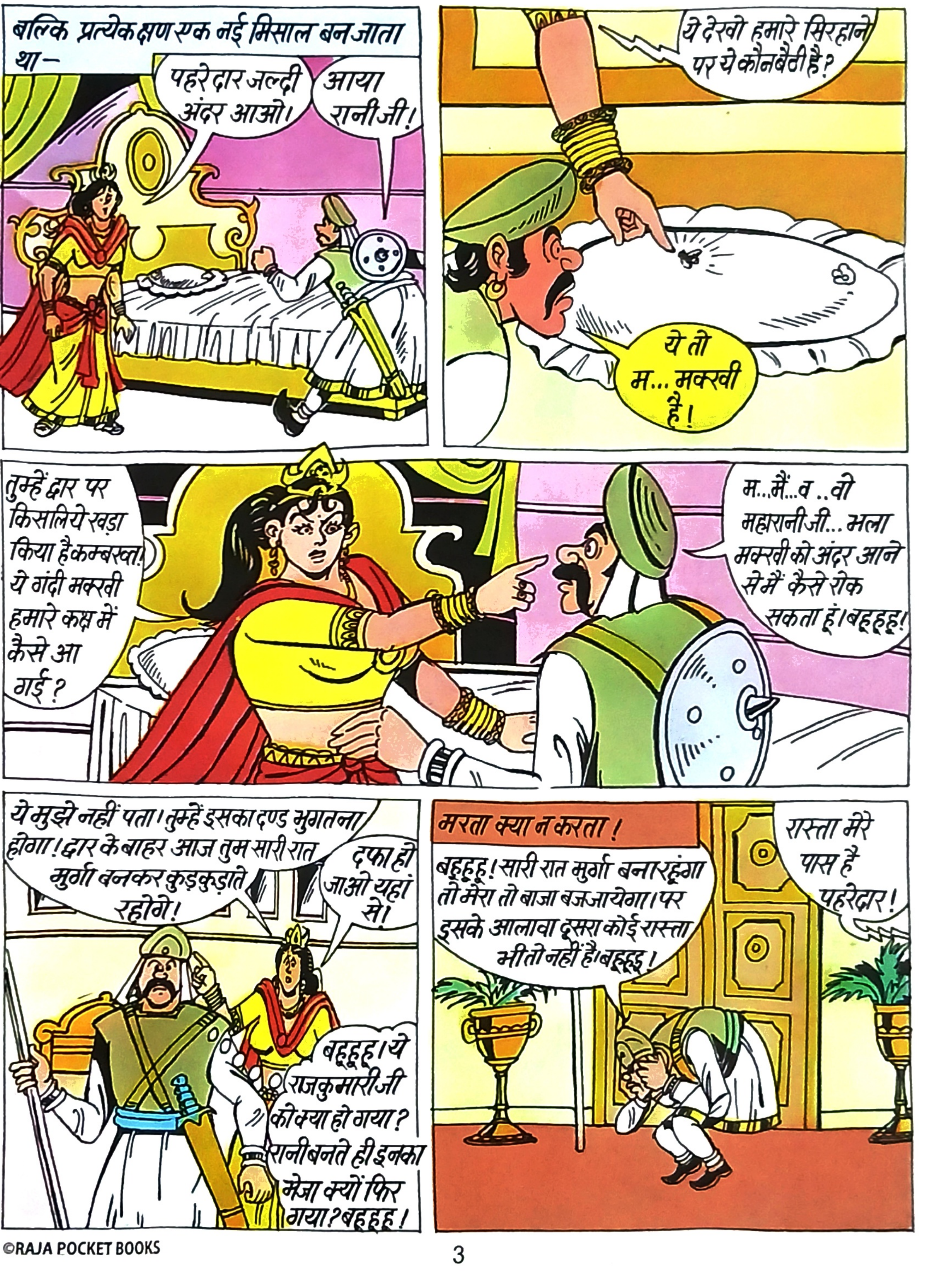
चित्रांकन : बेदी (जे.एम्स)

सहयोग : गौरव, अमित
श्रीकांत, विजय

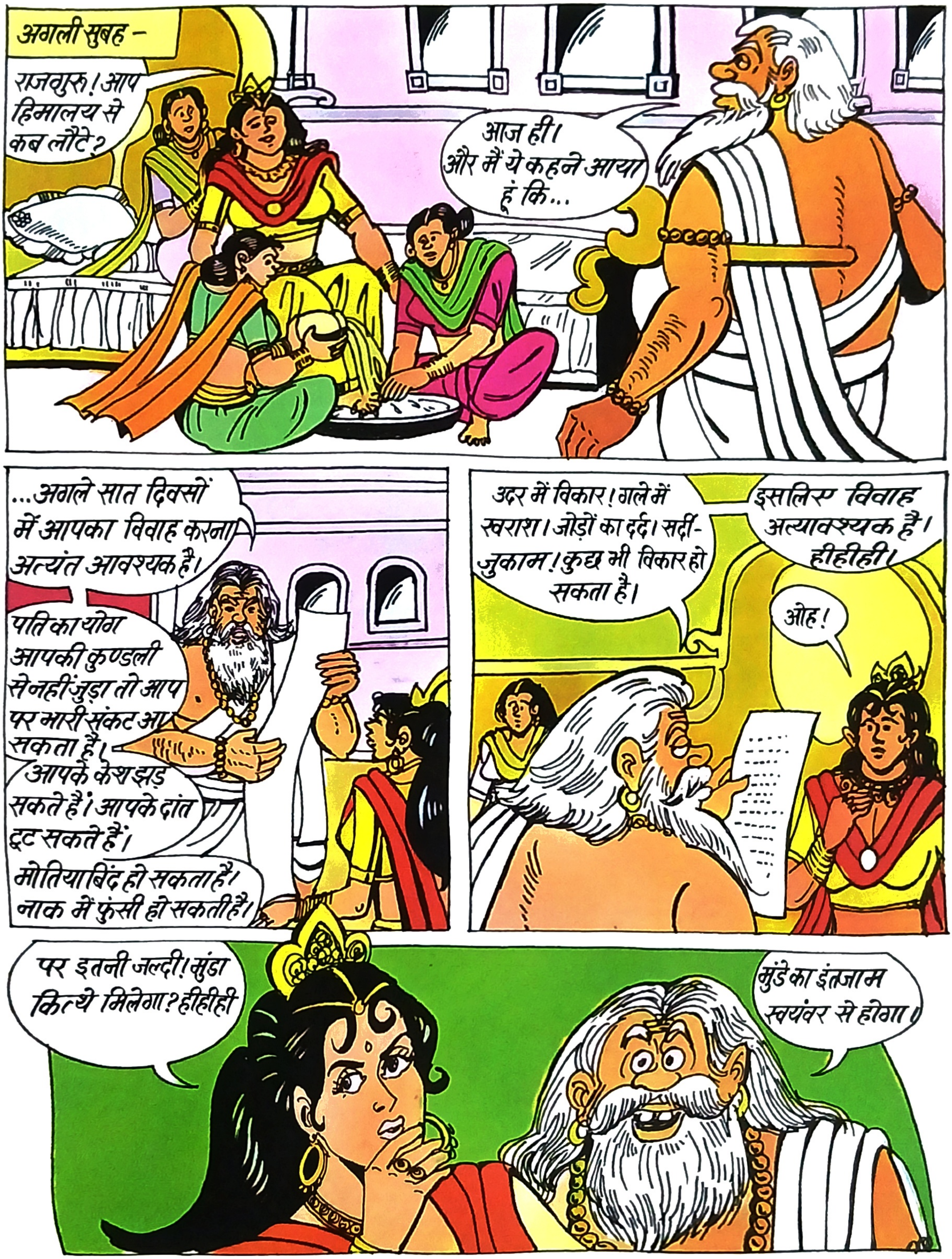





राजकुमारी रूपकंवर। जो स्वभाव से बहुत ही नर्म, मधुर व परोपकारी थी... राज्य की कमान हाथ में आते ही एकाएक ही बहुत कठोर हो उठी थी—
आवागमन के सार्वजनिक मार्ग को इसके घोड़े ने लीद करके गंदा कर दिया। इसे दस कोड़े लगाए जाएं।
किंतु इसमें मेरा क्या दोष? घोड़ा मुझे बता कर लीद थोड़े ही करता है। हीहीही। बहूहू!
ये जुल्म है। अत्याचार है। गुर्रर्रर्र!
सेनापति ठहाकासिंह इसे सजा तुरंत दे दो।
रानी का आदेश है। तुम्हें दस कोड़े लगाने ही पड़ेंगे।
तड़ाक
आह!
अब तुम जा सकते हो।
आंय! पर अभी तो आपने मुझे एक ही कोड़ा मारा है सेनापतिजी!
नहीं! दस कोड़े मारे हैं। पर एक साथ। यह देखो। हीहीही।
रानी रूपकंवर के कठोर हृदय हो जाने की ये इकलौती मिसाल नहीं थी।


बल्कि प्रत्येक क्षण एक नई मिसाल बन जाता था –
पहरेदार जल्दी अंदर आओ।
आया रानीजी!
ये देखो हमारे सिरहाने पर ये कौन बैठी है?
ये तो म... मक्खी है!
तुम्हें द्वार पर किसलिये खड़ा किया है कम्बख्त! ये गंदी मक्खी हमारे कक्ष में कैसे आ गई?
म...मैं...व..वो महारानीजी... भला मक्खी को अंदर आने से मैं कैसे रोक सकता हूं। बहुहुहू!
ये मुझे नहीं पता। तुम्हें इसका दण्ड भुगतना होगा! द्वार के बाहर आज तुम सारी रात मुर्गा बनकर कुड़कुड़ाते रहोगे!
दफा हो जाओ यहां से।
बहुहुहु। ये राजकुमारीजी को क्या हो गया? रानी बनते ही इनका भेजा क्यों फिर गया? बहुहुहु!
मरता क्या न करता!
बहुहुहु! सारी रात मुर्गा बना रहूंगा तो मेरा तो बाजा बज जायेगा। पर इसके आलावा दूसरा कोई रास्ता भी तो नहीं है। बहुहुहु!
रास्ता मेरे पास है पहरेदार!

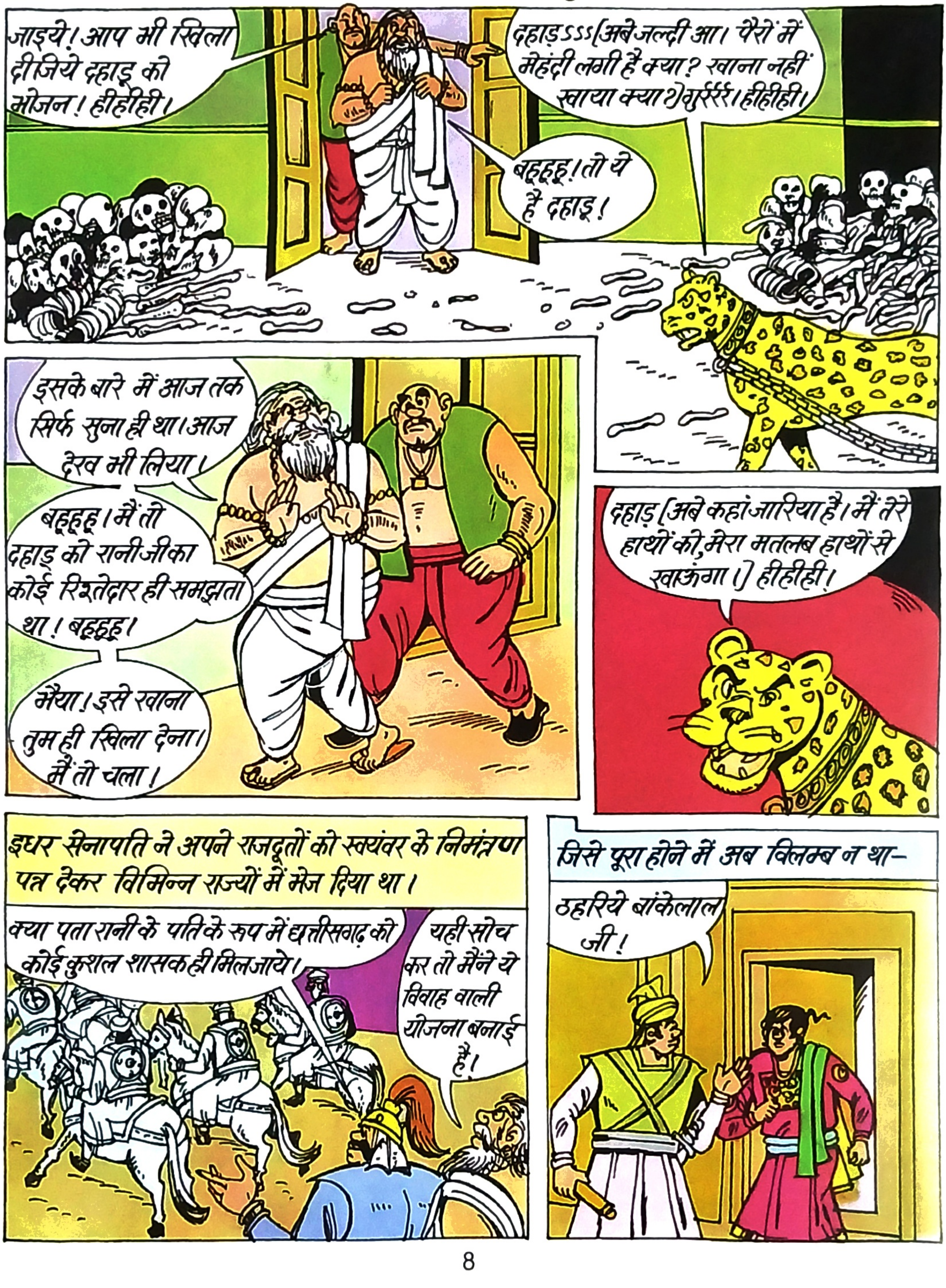

अरे सेनापतिजी आप ?
हां ! जिस रास्ते की बात मैं कर रहा था वो ये है।
कुड़कुड़ हीहीही।
मैं इस मुर्गे को यहां बांध देता हूं। ये रात भर यहां बंधा कुड़कुड़ करता रहेगा। तब तक तुम यहां ठीक से खड़े रहकर...
...चौकसी करना!
मगर ध्यान रहे। रानी के जगने से पहले इस मुर्गे को यहां से उड़ाकर खुद मुर्गा बन जाना। हीहीही।
मैं ऐसा ही करूंगा सेनापतिजी! हीहीही।
कुड़कुड़! अबे अब दाना तो डाल! गुर्ररर! कुड़कुड़ हीहीही।
सेनापति का हृदय विशाल व परोपकारी था।
अब मैं ऐसा न करूं तो क्या करूं!
...मुझसे निर्दोष लोगों पर होता अत्याचार देखा नहीं जाता।
महारानी के अत्याचार से भरे निर्णयों में दण्ड कम करके कम से कम मैं तो उसके पाप में भागी होने से बचने की चेष्टा करता हूं!
और हमेशा ही करता रहूंगा! हीहीही

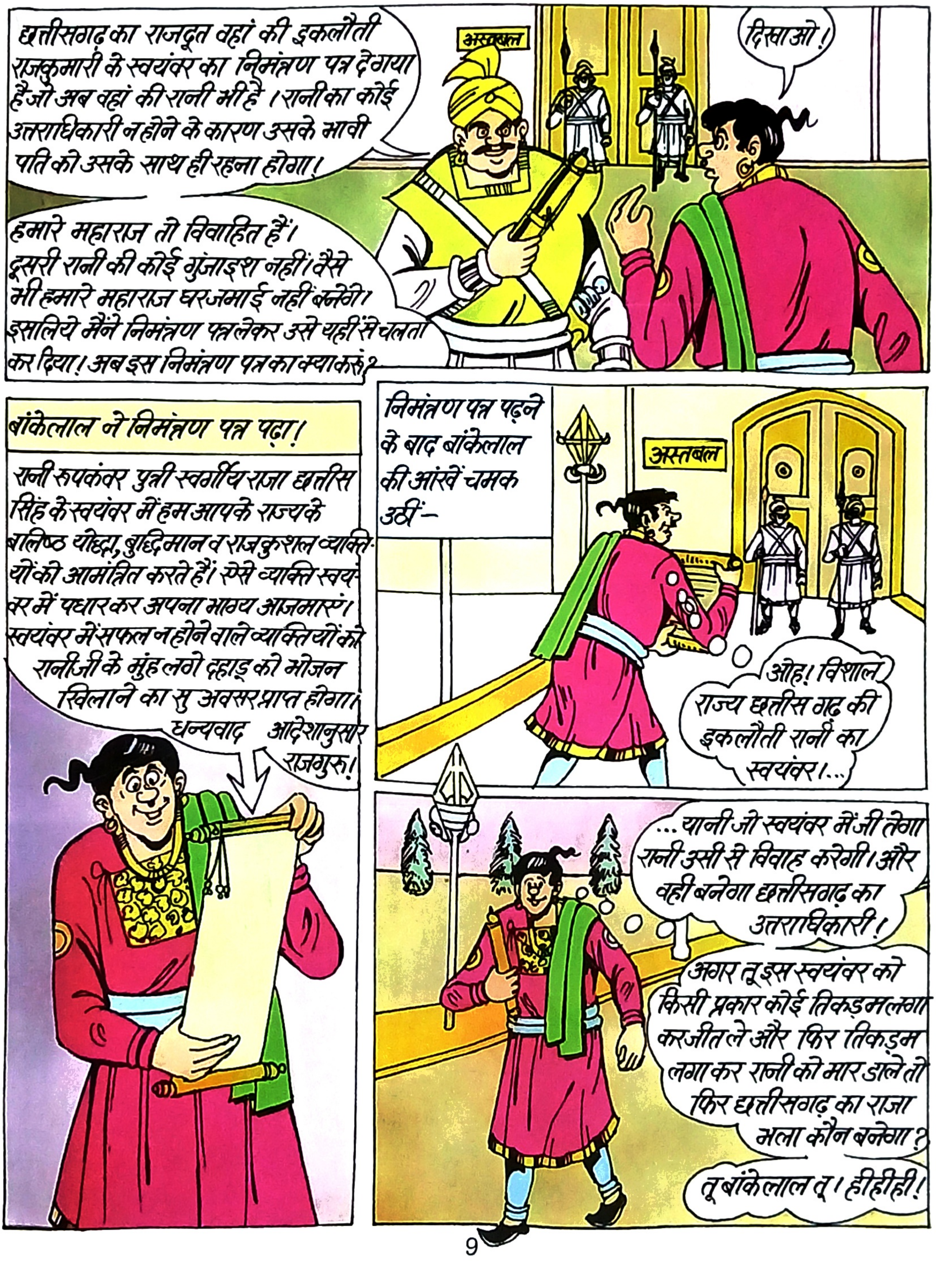

अगली सुबह –
राजगुरु! आप हिमालय से कब लौटे?
आज ही। और मैं ये कहने आया हूं कि...
...अगले सात दिवसों में आपका विवाह करना अत्यंत आवश्यक है।
पति का योग आपकी कुण्डली से नहीं जुड़ा तो आप पर भारी संकट आ सकता है।
आपके केश झड़ सकते हैं। आपके दांत टूट सकते हैं।
मोतियाबिंद हो सकता है। नाक में फुंसी हो सकती है।
उदर में विकार! गले में खराश। जोड़ों का दर्द। सर्दी-जुकाम! कुछ भी विकार हो सकता है।
इसलिए विवाह अत्यावश्यक है। हीहीही।
ओह!
पर इतनी जल्दी! मुंडा कित्थे मिलेगा? हीहीही
मुंडे का इंतजाम स्वयंवर से होगा।

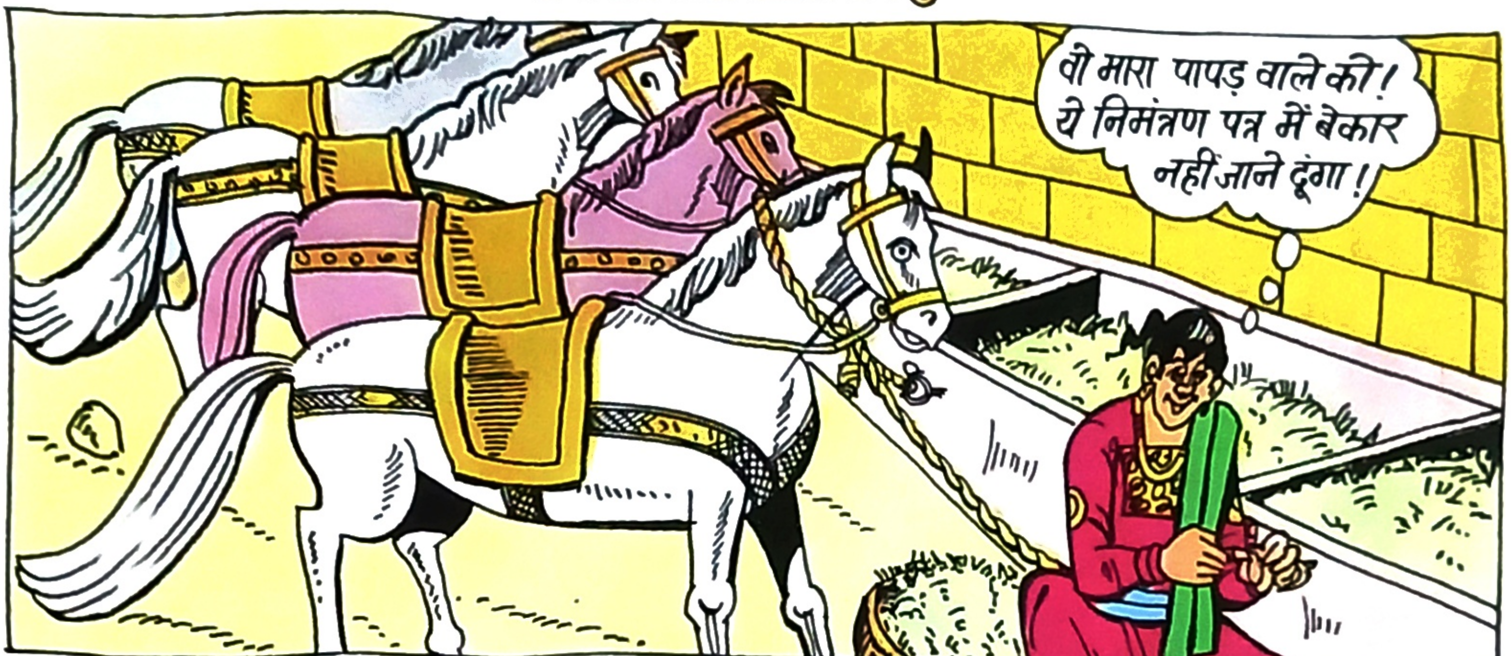
मुंडा = लड़का।

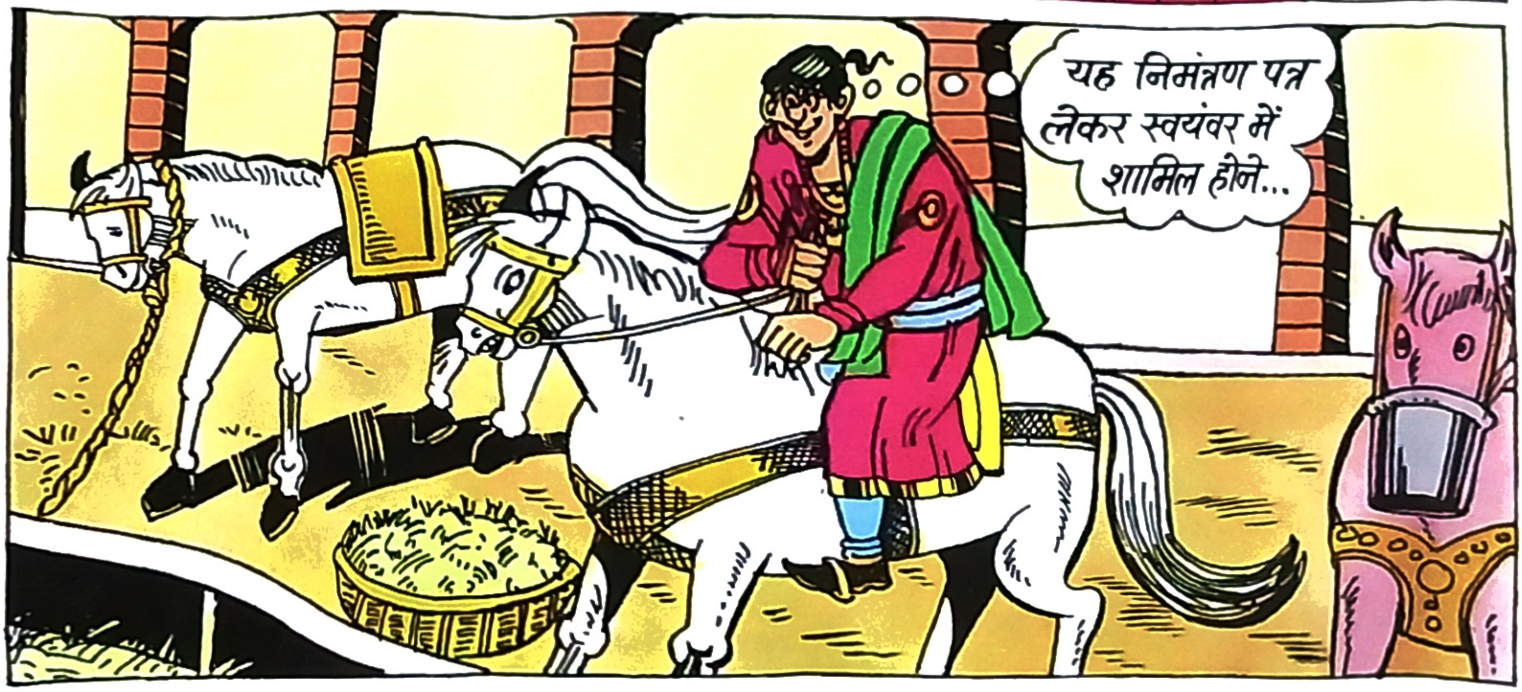

समय की कमी को देखते हुए मैंने निमंत्रण-पत्र भी तैयार कर लिये हैं महारानी जी! ये देखिये। हीहीही।
परन्तु तुम्हें इस बात का पता कैसे चला महामंत्री चमचा सिंह!
महामंत्री जी को मैंने ही आप पर आनेवाले संकट के विषय में बताया था।
मुझे ऐसे ही लोग पसन्द हैं महामंत्री चमचा सिंह। तुम मेरे सच्चे हमदर्द हो। मैं खुश हुई।
इसी खुशी में आज दहाड़ू को भोजन राजगुरु अपने हाथों से खिलाएंगे हीही-ही।
आपका आदेश सिर आंखों पर!
तो फिर फौरन निमंत्रण-पत्र बंटवाकर मेरे स्वयंवर का ऐलान कर दीजिए।
राजगुरु आप जाकर दहाड़ू को भोजन दीजिये। मैं निमंत्रण भिजवाने का कार्य सेनापति ठहाका सिंह को सौंप देता हूं। हीहीही!
मैं दहाड़ू को भोजन देने जाता हूं।

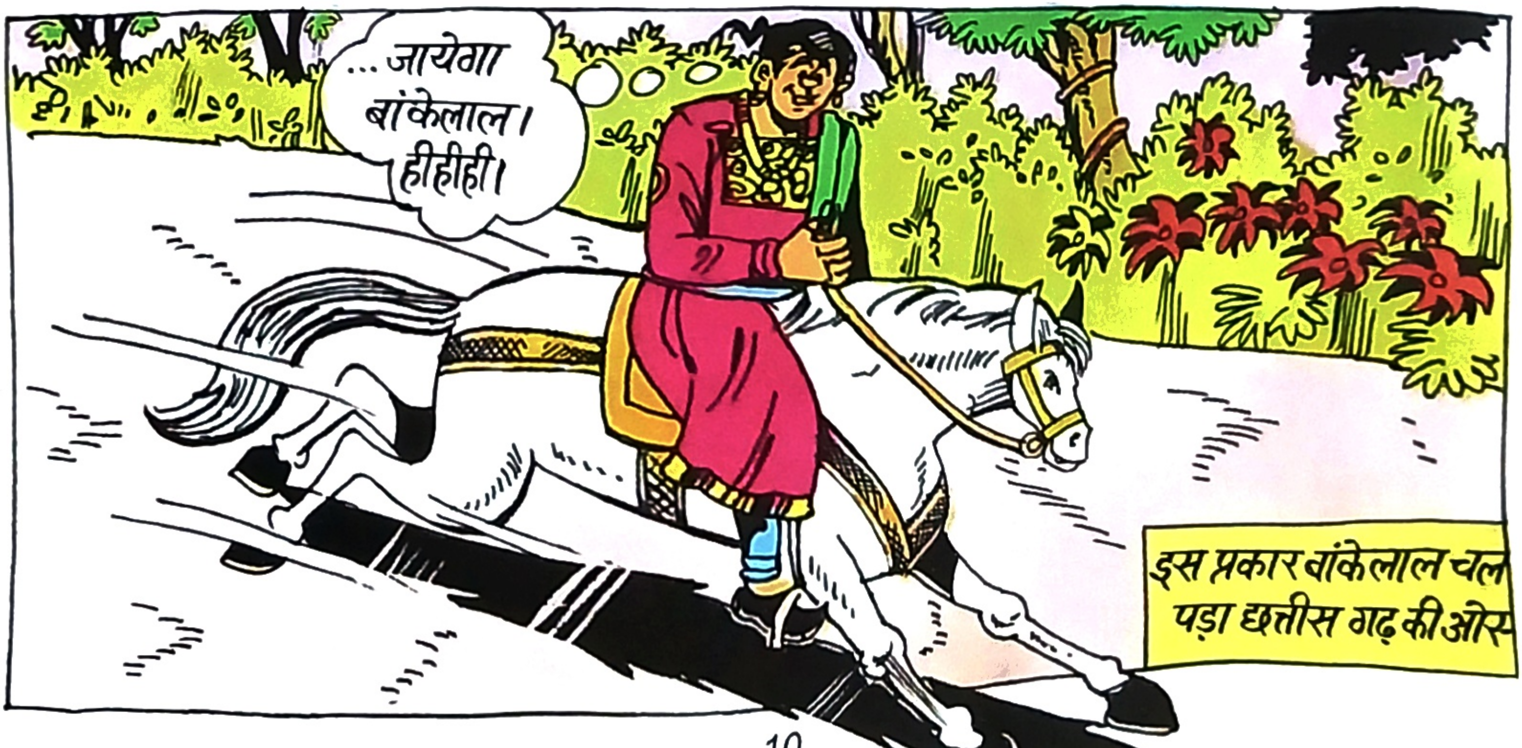

राजगुरु जल्दी ही भोजन लेकर दहाड़ के कक्ष के बाहर पहुंचा-
अरे! राजगुरु आप!
हां,जल्दी कक्ष खोलो। महारानीजी आज बहुत प्रसन्न हैं। उनकी इच्छा है कि आज मैं खुद अपने हाथों से दहाड़ को भोजन खिलाऊं
तो फिर इस कक्ष में झांक लीजिये। हीहीही।
क्यों? इसमें क्या है?
अरे इसमें तो मानव खोपड़ियां व हड्डियां हैं।
जी हां राजगुरु! ये सब व्यक्ति दहाड़ को भोजन खिलाने आये थे। हीहीही।...
...पर क्या है कि दहाड़ कम्बख्त बहुत शैतान व बदमाश है।
कम्बख्त को सही भोजन की पहचान ही नहीं है। ये अपने भोजन की तरफ तो देखता भी नहीं...बल्कि उसे ही खा जाता है जो इसे भोजन खिलाने जाता है...। हीहीही!

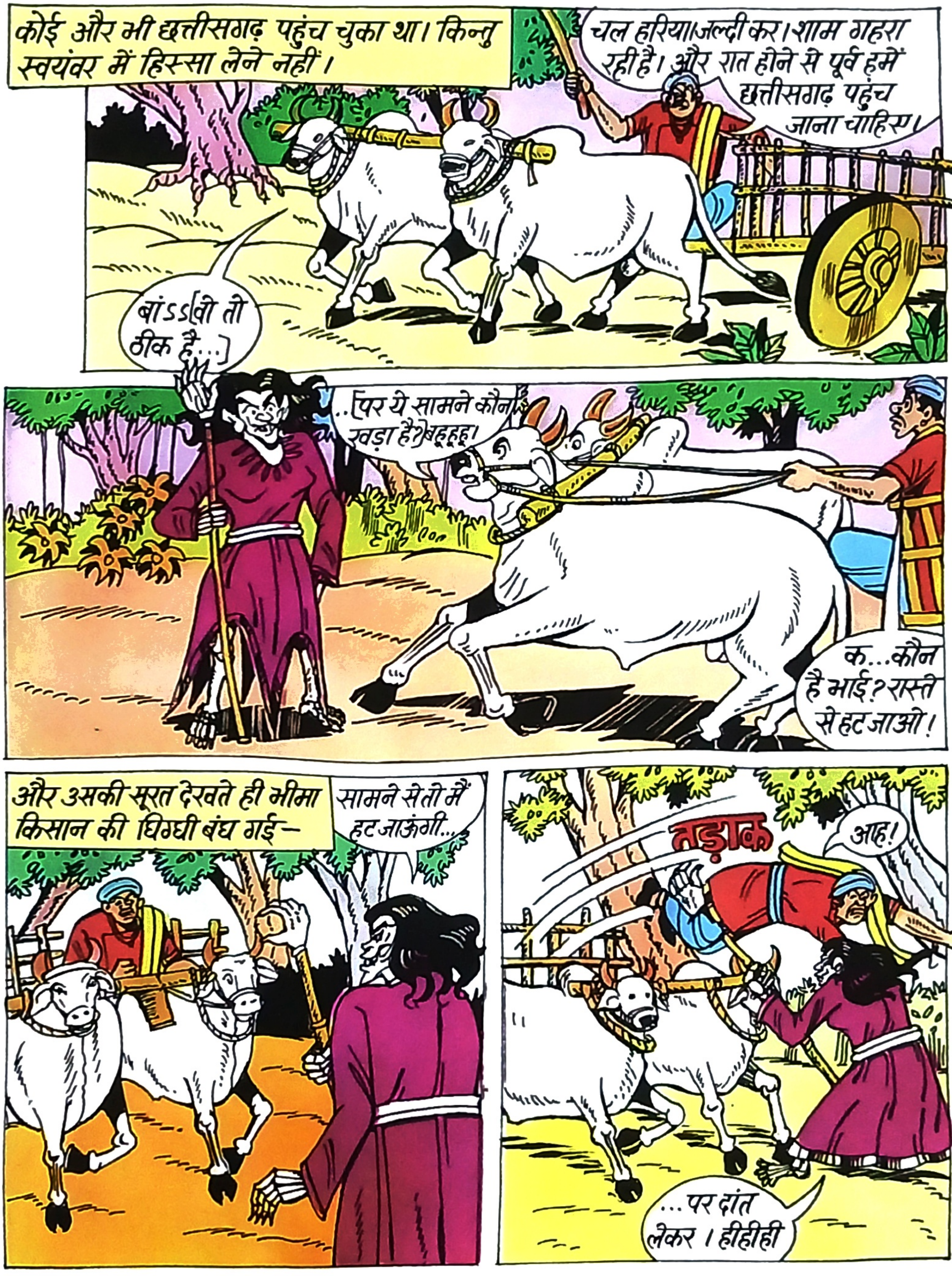

जाइये! आप भी खिला दीजिये दहाड़ को भोजन! हीहीही।
दहाड़ऽऽऽ[अबे जल्दी आ। पैरों में मेहंदी लगी है क्या? खाना नहीं खाया क्या?]गुर्रर्रर। हीहीही।
बहहह! तो ये है दहाड़!
इसके बारे में आज तक सिर्फ सुना ही था। आज देख भी लिया।
बहहह। मैं तो दहाड़ को रानीजीका कोई रिश्तेदार ही समझता था! बहहह।
भैया! इसे खाना तुम ही खिला देना। मैं तो चला!
दहाड़ [अबे कहां जारिया है। मैं तेरे हाथों को, मेरा मतलब हाथों से खाऊंगा।] हीहीही।
इधर सेनापति ने अपने राजदूतों को स्वयंवर के निमंत्रण पत्र देकर विभिन्न राज्यों में भेज दिया था।
क्या पता रानी के पति के रूप में छत्तीसगढ़ को कोई कुशल शासक ही मिलजाये।
यही सोच कर तो मैंने ये विवाह वाली योजना बनाई है।
जिसे पूरा होने में अब विलम्ब न था–
ठहरिये बांकेलाल जी!

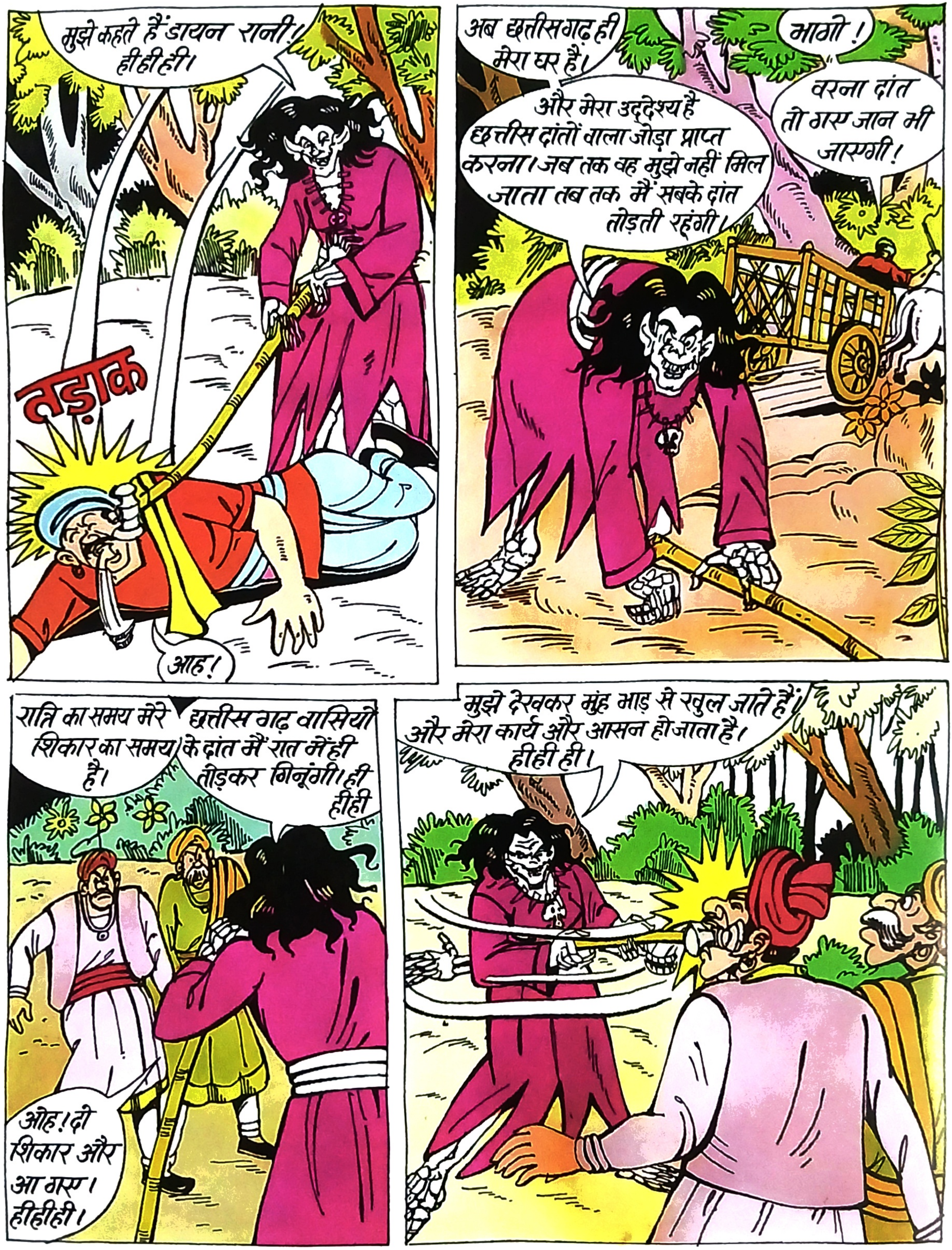

छत्तीसगढ़ का राजदूत वहां की इकलौती राजकुमारी के स्वयंवर का निमंत्रण पत्र दे गया है जो अब वहां की रानी भी है। रानी का कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण उसके भावी पति को उसके साथ ही रहना होगा।
अस्तबल
दिखाओ!
हमारे महाराज तो विवाहित हैं। दूसरी रानी की कोई गुंजाइश नहीं। वैसे भी हमारे महाराज घरजमाई नहीं बनेंगे। इसलिये मैंने निमंत्रण पत्र लेकर उसे यहीं से चलता कर दिया! अब इस निमंत्रण पत्र का क्या करूं?
बांकेलाल ने निमंत्रण पत्र पढ़ा!
रानी रुपकंवर पुत्री स्वर्गीय राजा छत्तीस सिंह के स्वयंवर में हम आपके राज्य के बलिष्ठ योद्धा, बुद्धिमान व राजकुशल व्यक्तियों को आमंत्रित करते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वयंवर में पधार कर अपना भाग्य आजमाएं। स्वयंवर में सफल न होने वाले व्यक्तियों को रानीजी के मुंह लगे दहाड़ू को भोजन खिलाने का सु अवसर प्राप्त होगा।
धन्यवाद
आदेशानुसार राजगुरु!
निमंत्रण पत्र पढ़ने के बाद बांकेलाल की आंखें चमक उठीं —
अस्तबल
ओह! विशाल राज्य छत्तीस गढ़ की इकलौती रानी का स्वयंवर।...
...यानी जो स्वयंवर में जीतेगा रानी उसी से विवाह करेगी। और वही बनेगा छत्तीसगढ़ का उत्तराधिकारी!
अगर तू इस स्वयंवर को किसी प्रकार कोई तिकड़म लगा कर जीत ले और फिर तिकड़म लगा कर रानी को मार डाले तो फिर छत्तीसगढ़ का राजा भला कौन बनेगा?
तू बांकेलाल तू। हीहीही!


वो मारा पापड़ वाले को!
ये निमंत्रण पत्र में बेकार नहीं जाने दूंगा।

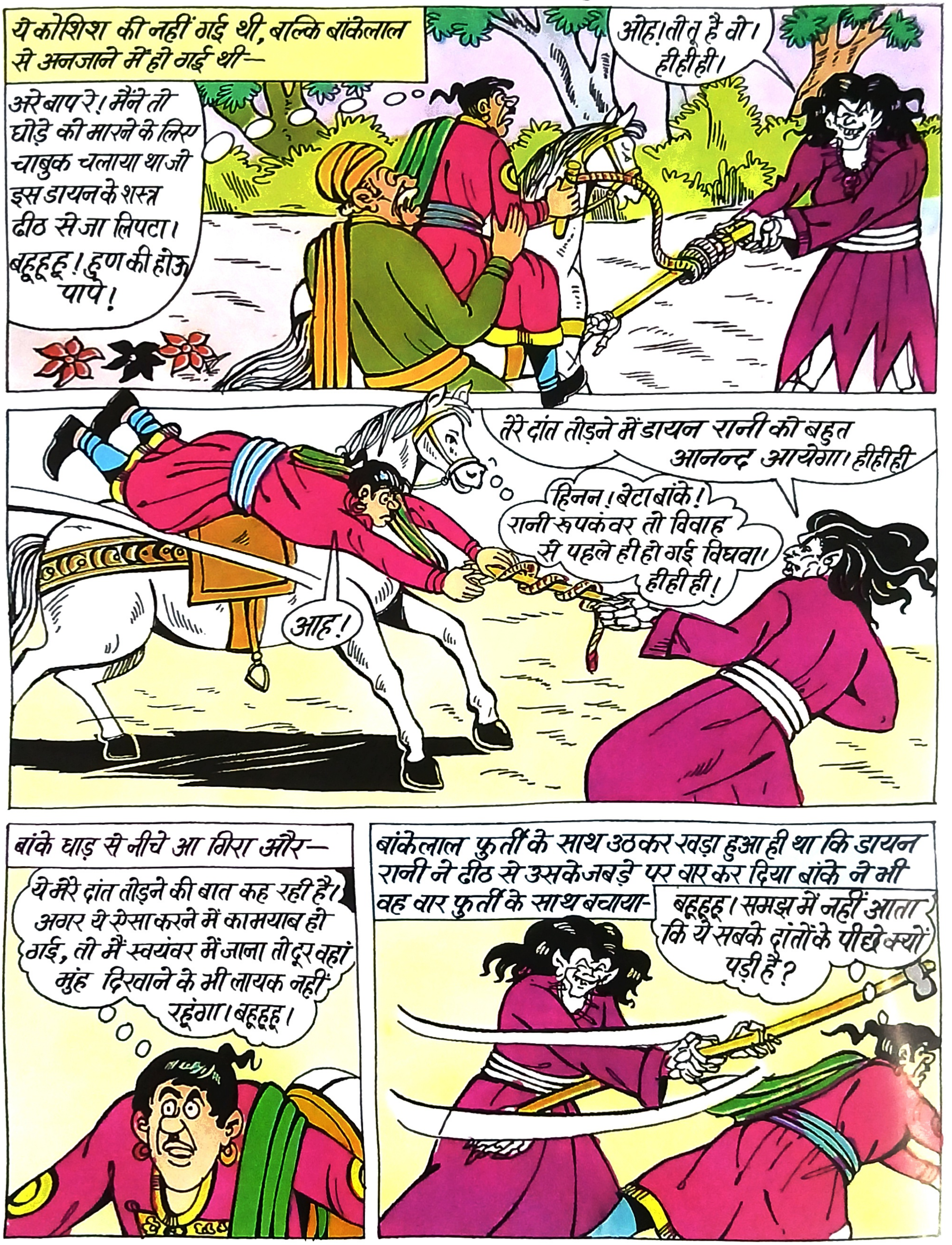

यह निमंत्रण पत्र लेकर स्वयंवर में शामिल होने...


...जायेगा बांकेलाल। हीहीही।
इस प्रकार बांकेलाल चल पड़ा छत्तीस गढ़ की ओर

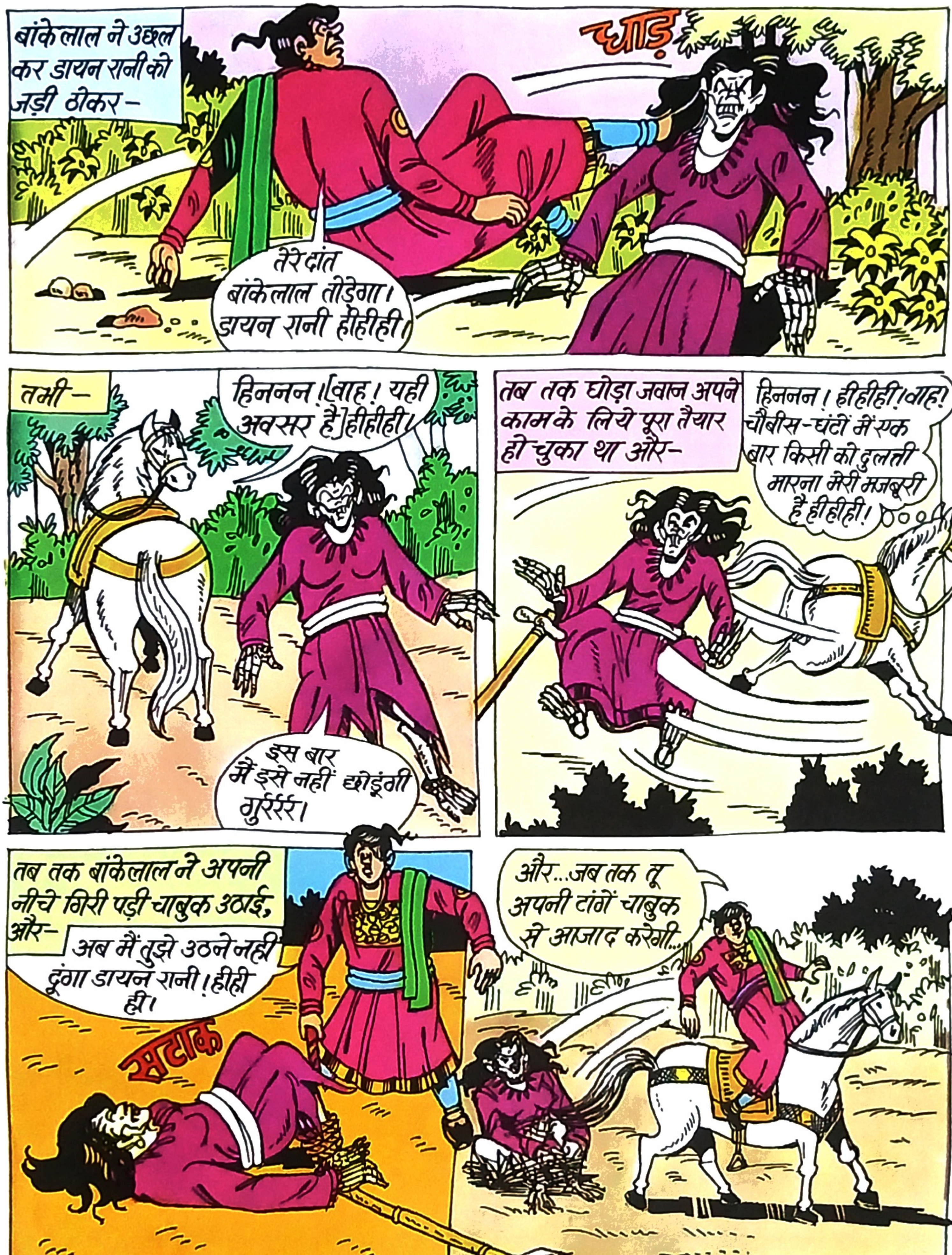

कोई और भी छत्तीसगढ़ पहुंच चुका था। किन्तु स्वयंवर में हिस्सा लेने नहीं।
चल हरिया। जल्दी कर। शाम गहरा रही है। और रात होने से पूर्व हमें छत्तीसगढ़ पहुंच जाना चाहिए।
बांऽऽ[वो तो ठीक है...]
..[पर ये सामने कौन खड़ा है?]हहहह।
क...कौन है भाई? रास्ते से हट जाओ!
और उसकी सूरत देखते ही भीमा किसान की घिग्घी बंध गई—
सामने से तो मैं हट जाऊंगी...
तड़ाक
आह!
...पर दांत लेकर। हीहीही

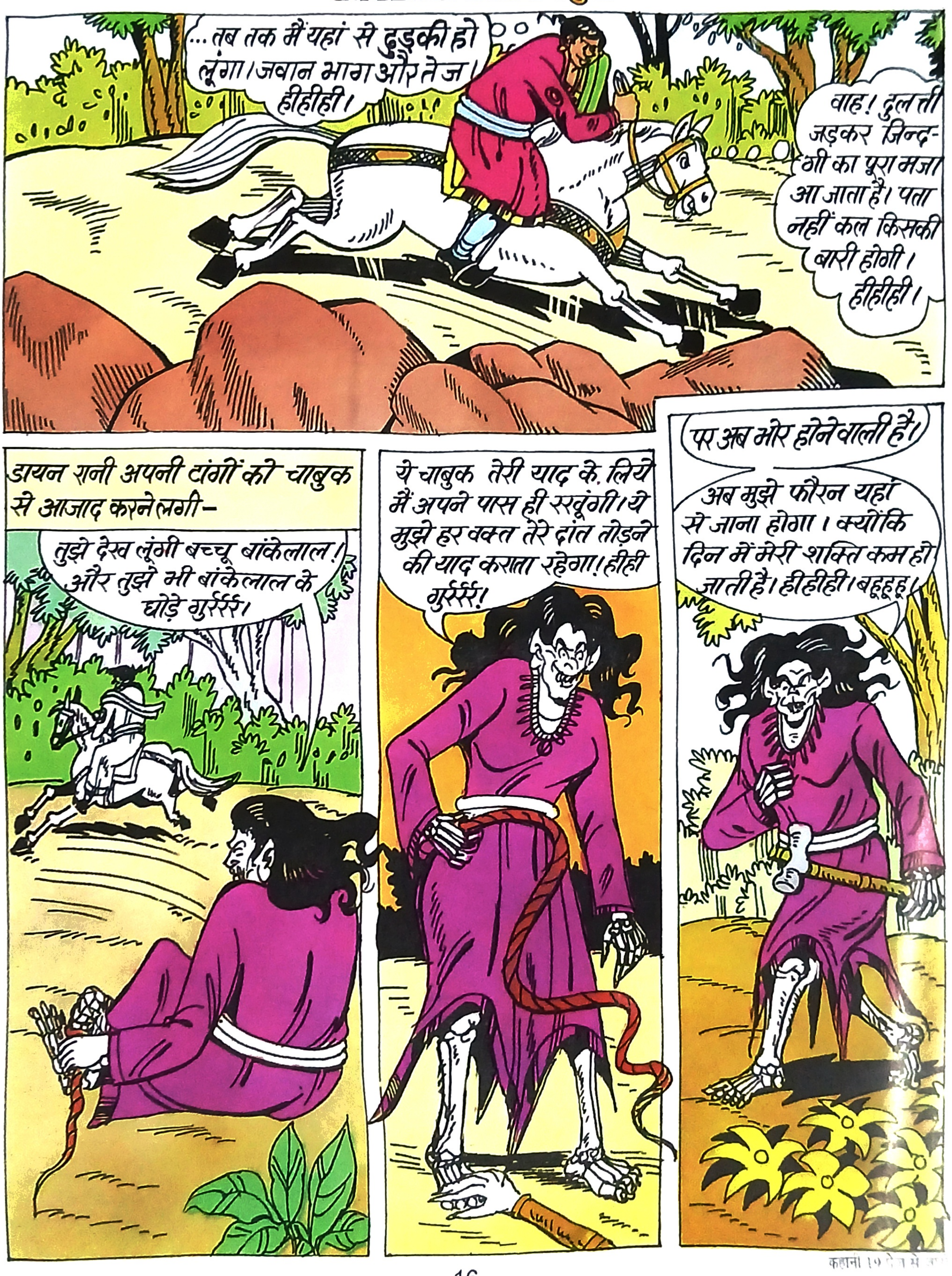

मुझे कहते हैं डायन रानी! ही ही ही।
तड़ाक
आह!
अब छत्तीसगढ़ ही मेरा घर है।
और मेरा उद्देश्य है छत्तीस दांतों वाला जोड़ा प्राप्त करना। जब तक वह मुझे नहीं मिल जाता तब तक मैं सबके दांत तोड़ती रहूंगी।
भागो!
वरना दांत तो गए जान भी जाएगी!
रात्रि का समय मेरे शिकार का समय है।
छत्तीसगढ़ वासियों के दांत मैं रात में ही तोड़कर गिनूंगी। ही हीही
ओह! दो शिकार और आ गए। हीहीही।
मुझे देखकर मुंह भाड़ से खुल जाते हैं। और मेरा कार्य और आसान हो जाता है। हीही ही।


तूने मुंह क्यों बंद कर रखा है? खोल मुंह? डायन रानी तेरे भी दांत गिनेगी। हीहीही।
ऊं ऊं ऊं ओह, दांत।
...लेलो! हीहीही।
तू तो पोपला है! हीहीही!
डायन रानी का क्रोध सातवें आसमान पर जा पहुंचा!
तेरे दांत नहीं हैं तो क्या हुआ? आंत तो हैं। हीहीही। तेरी आंतें ही सही।
नहीं! बचाओ!
तभी हवा में सनसनाई वह चाबुक-
डायन रानी के शस्त्र 'ढीठ' को पकड़ने की जुर्रत किसने की?
सांयऽऽऽऽ

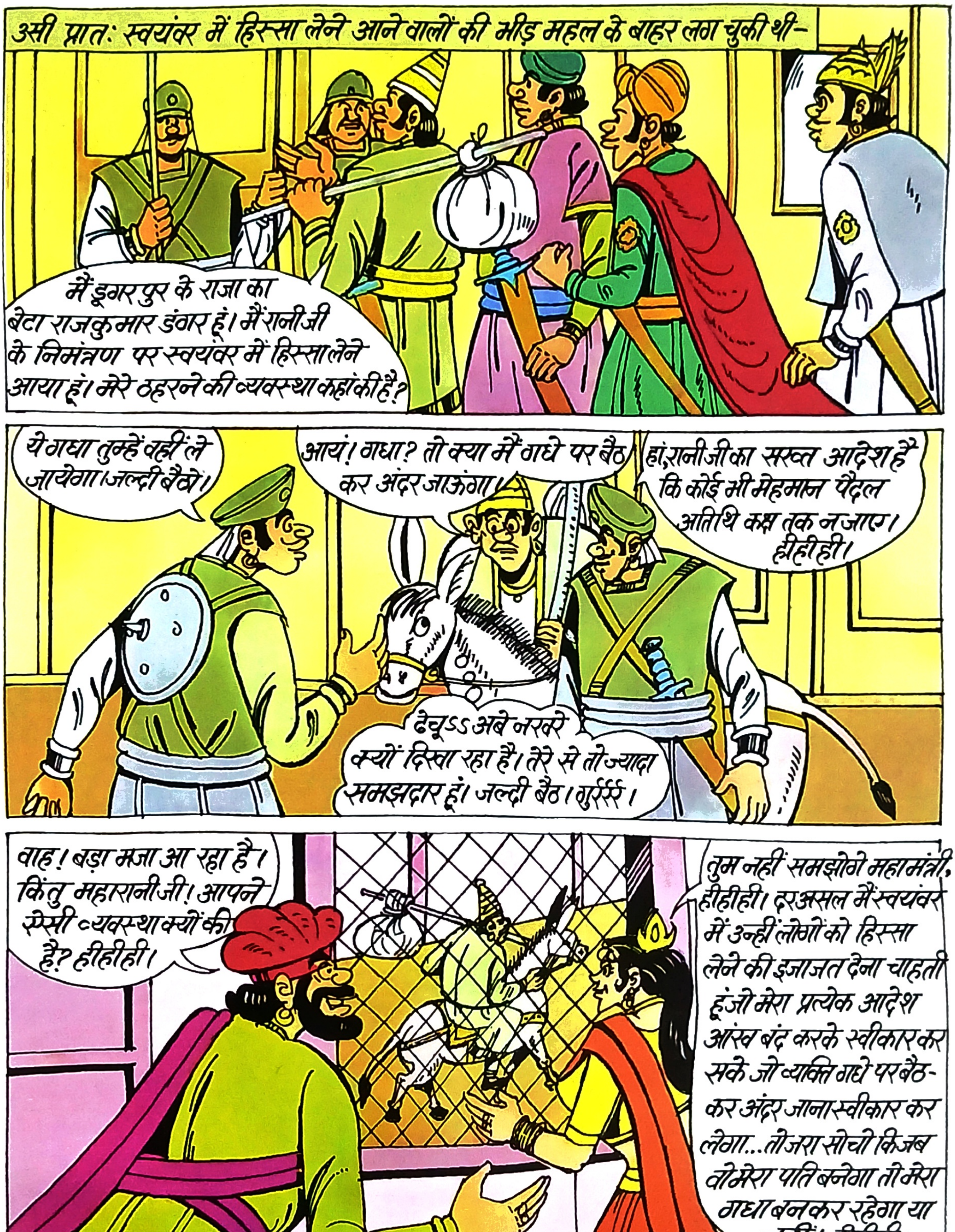


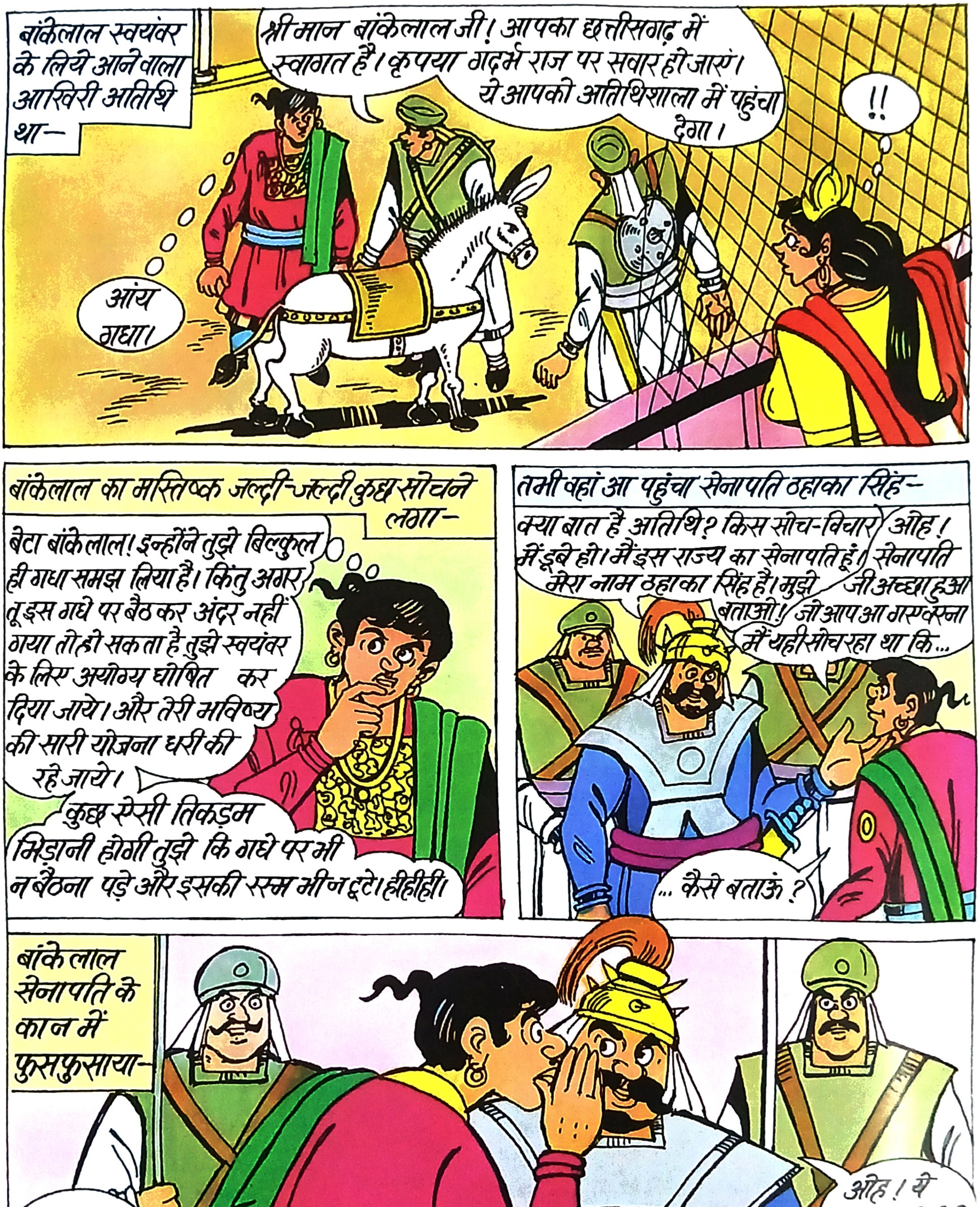
ये कोशिश की नहीं गई थी, बल्कि बांकेलाल से अनजाने में हो गई थी—
अरे बाप रे! मैंने तो घोड़े को मारने के लिए चाबुक चलाया था जो इस डायन के शस्त्र ढीठ से जा लिपटा। बहूहूहू! हुण की होऊ पापे!
ओह! तो तू है वो। हीहीही।
तेरे दांत तोड़ने में डायन रानी को बहुत आनन्द आयेगा। हीहीही
हिनन! बेटा बांके! रानी रूपकंवर तो विवाह से पहले ही हो गई विधवा। हीहीही!
आह!
बांके घाड़ से नीचे आ गिरा और—
ये मेरे दांत तोड़ने की बात कह रही है। अगर ये ऐसा करने में कामयाब हो गई, तो मैं स्वयंवर में जाना तो दूर वहां मुंह दिखाने के भी लायक नहीं रहूंगा। बहूहूहू।
बांकेलाल फुर्ती के साथ उठकर खड़ा हुआ ही था कि डायन रानी ने ढीठ से उसके जबड़े पर वार कर दिया बांके ने भी वह वार फुर्ती के साथ बचाया—
बहूहूहू। समझ में नहीं आता कि ये सबके दांतों के पीछे क्यों पड़ी है?


बांकेलाल ने उछल कर डायन रानी को जड़ी ठोकर –
धाड़
तेरे दांत बांकेलाल तोड़ेगा। डायन रानी हीहीही।
तभी –
हिनननन।
वाह! यही अवसर है। हीहीही।
इस बार मैं इसे नहीं छोड़ूंगी गुर्ररर।
तब तक घोड़ा जवान अपने काम के लिये पूरा तैयार हो चुका था और –
हिनननन। हीहीही। वाह! चौबीस-घंटों में एक बार किसी को दुलत्ती मारना मेरी मजबूरी है हीहीही।
तब तक बांकेलाल ने अपनी नीचे गिरी पड़ी चाबुक उठाई, और –
अब मैं तुझे उठने नहीं दूंगा डायन रानी। हीही ही।
सटाक
और...जब तक तू अपनी टांगें चाबुक से आजाद करेगी...

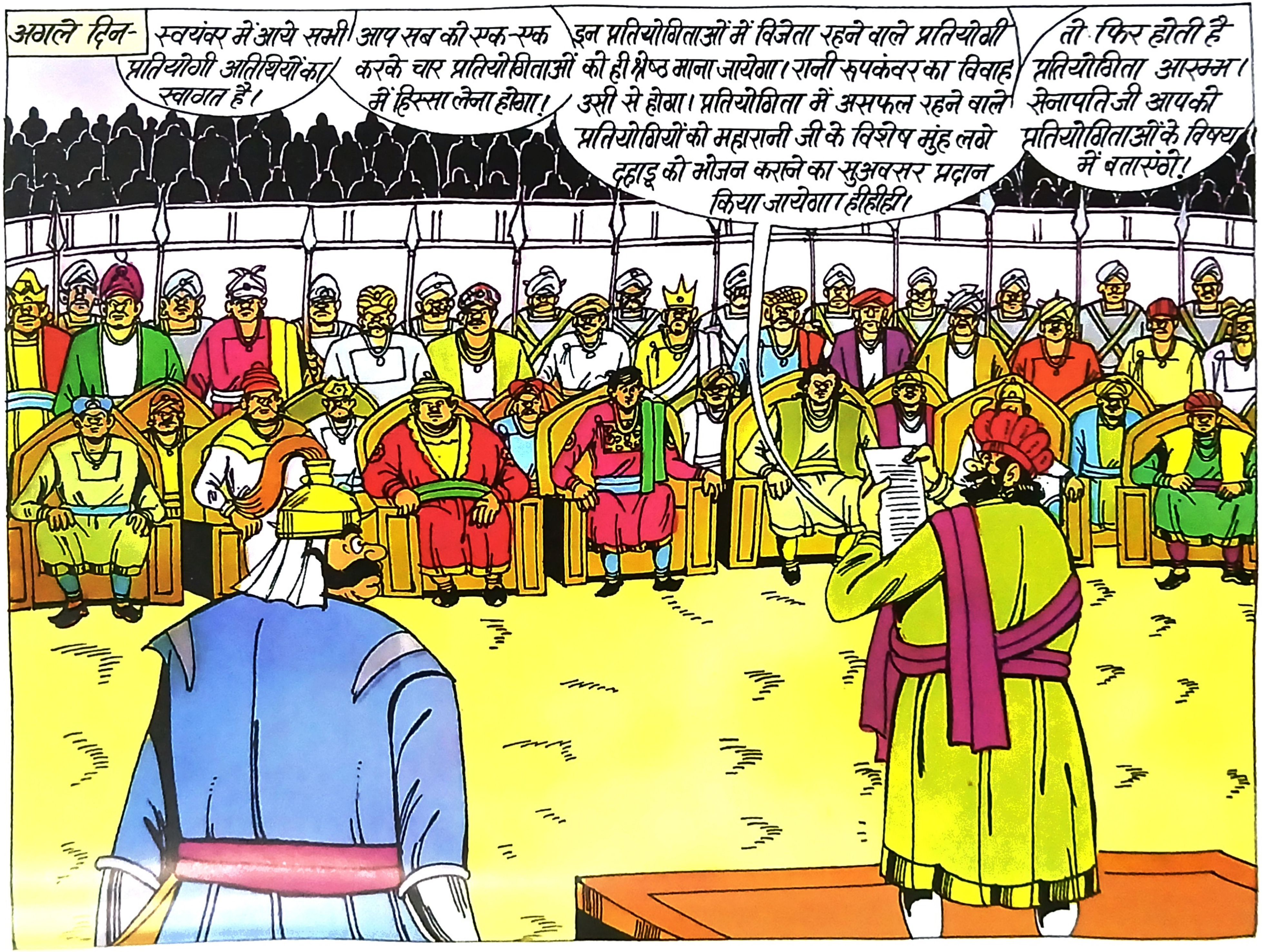

...तब तक मैं यहां से दुड़की हो लूंगा। जवान भाग और तेज! हीहीही।
वाह! दुलत्ती जड़कर जिन्दगी का पूरा मजा आ जाता है। पता नहीं कल किसकी बारी होगी। हीहीही।
डायन रानी अपनी टांगों की चाबुक से आजाद करने लगी–
तुझे देख लूंगी बच्चू बांकेलाल! और तुझे भी बांकेलाल के घोड़े गुर्रर्र।
ये चाबुक तेरी याद के लिये मैं अपने पास ही रखूंगी। ये मुझे हर वक्त तेरे दांत तोड़ने की याद कराता रहेगा! हीही गुर्रर्र!
पर अब भोर होने वाली है।
अब मुझे फौरन यहां से जाना होगा। क्योंकि दिन में मेरी शक्ति कम हो जाती है। हीहीही। बहूहूहू।

कहानी 19 पेज में

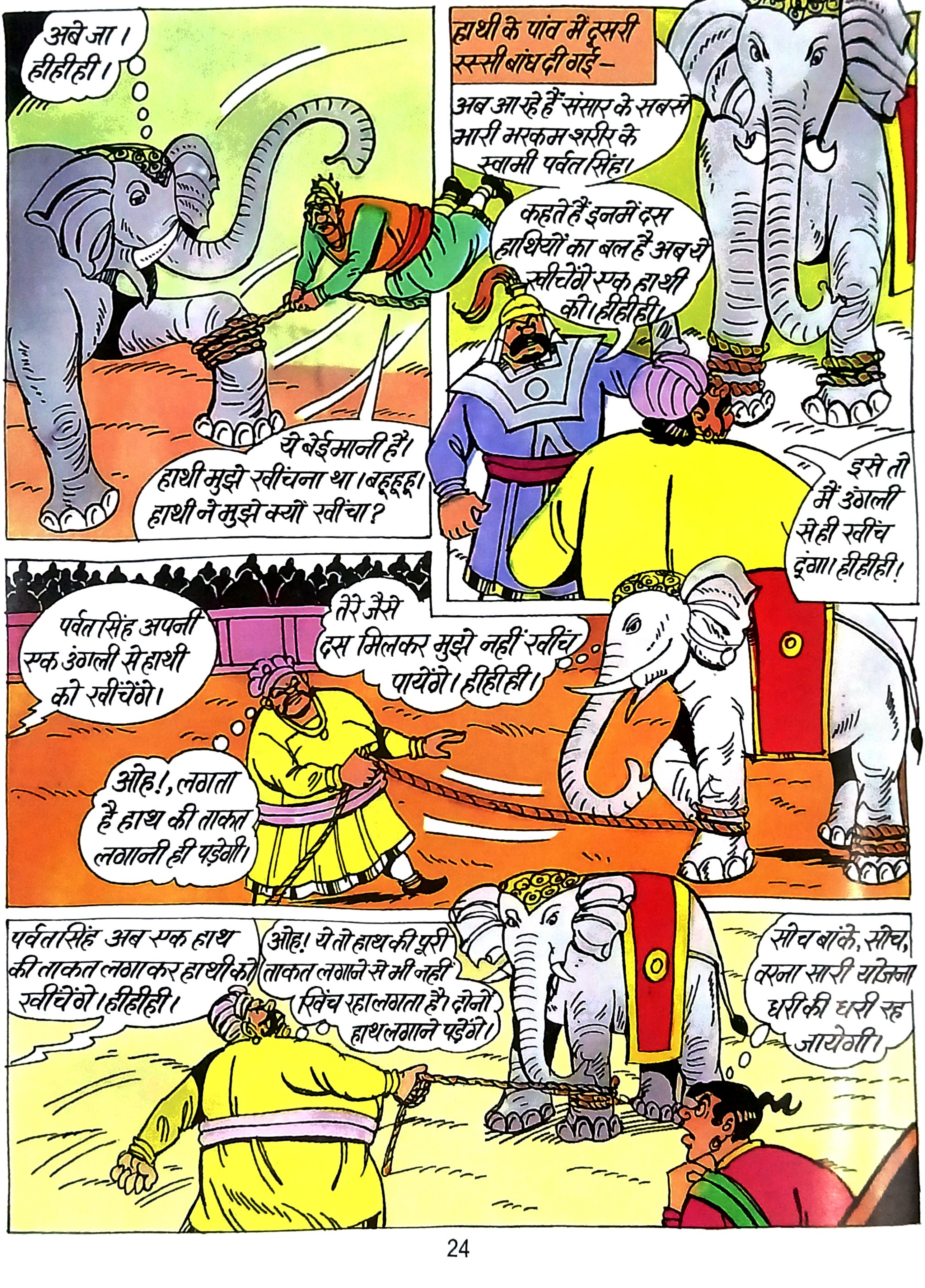

असी प्रात: स्वयंवर में हिस्सा लेने आने वालों की भीड़ महल के बाहर लग चुकी थी-
मैं डूंगर पुर के राजा का बेटा राजकुमार डंगर हूं। मैं रानीजी के निमंत्रण पर स्वयंवर में हिस्सा लेने आया हूं। मेरे ठहरने की व्यवस्था कहां की है?
ये गधा तुम्हें वहीं ले जायेगा। जल्दी बैठो।
आयं! गधा? तो क्या मैं गधे पर बैठ कर अंदर जाऊंगा?
हां, रानीजी का सख्त आदेश है कि कोई भी मेहमान पैदल अतिथि कक्ष तक न जाए। हीहीही।
ढेंचूऽऽ अबे नखरे क्यों दिखा रहा है। तेरे से तो ज्यादा समझदार हूं। जल्दी बैठ। गुर्रर्र।
वाह! बड़ा मजा आ रहा है। किंतु महारानीजी! आपने ऐसी व्यवस्था क्यों की है? हीहीही।
तुम नहीं समझोगे महामंत्री, हीहीही। दरअसल मैं स्वयंवर में उन्हीं लोगों को हिस्सा लेने की इजाजत देना चाहती हूं जो मेरा प्रत्येक आदेश आंख बंद करके स्वीकार कर सके जो व्यक्ति गधे पर बैठ-कर अंदर जाना स्वीकार कर लेगा...तो जरा सोचो कि जब वो मेरा पति बनेगा तो मेरा गधा बन कर रहेगा या नहीं! हीहीही।

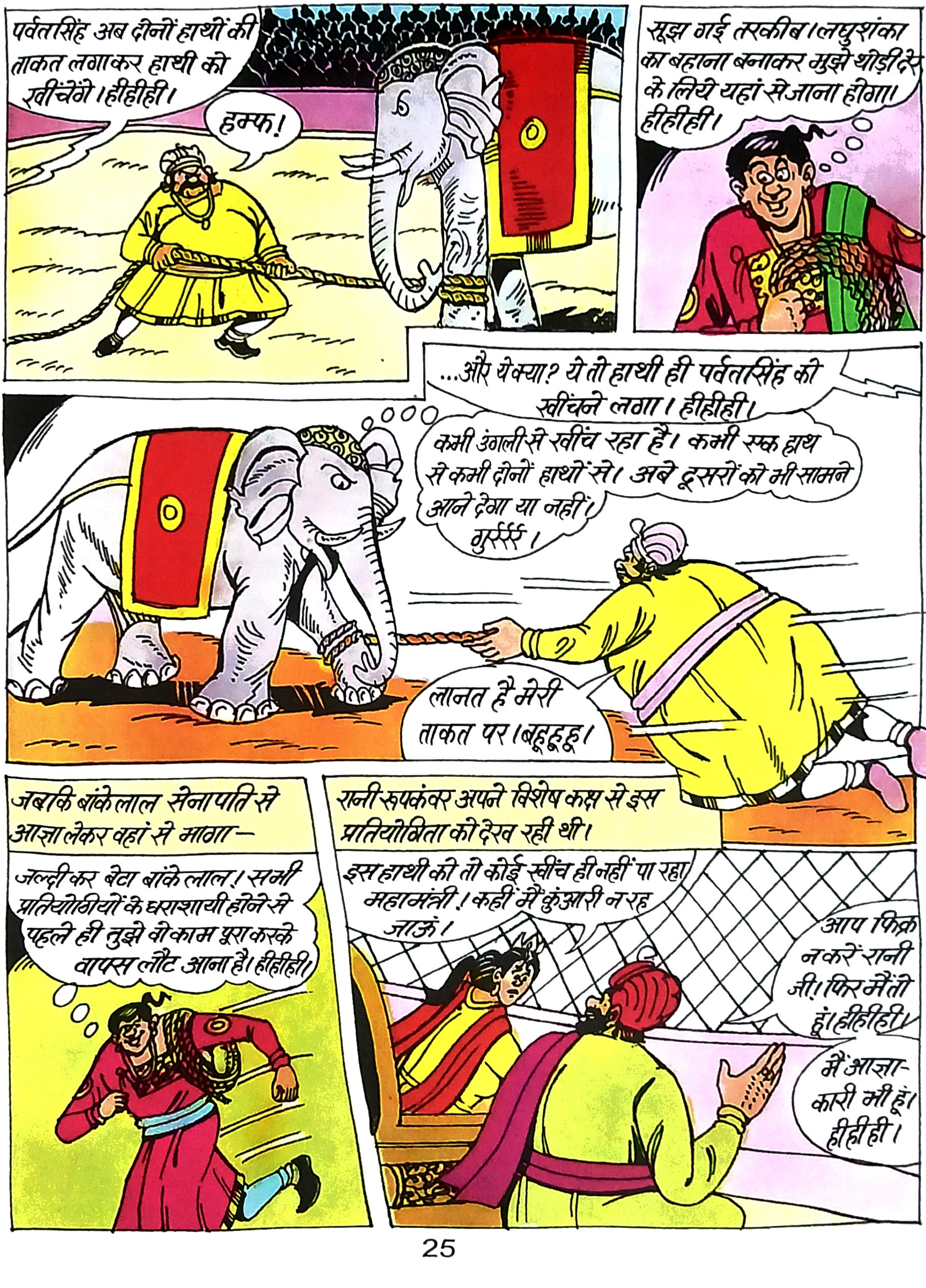

बांकेलाल स्वयंवर के लिये आने वाला आखिरी अतिथि था—
श्रीमान बांकेलाल जी! आपका छत्तीसगढ़ में स्वागत है। कृपया गर्दभ राज पर सवार हो जाएं। ये आपको अतिथिशाला में पहुंचा देगा।
!!
आंय गधा!
बांकेलाल का मस्तिष्क जल्दी-जल्दी कुछ सोचने लगा—
बेटा बांकेलाल! इन्होंने तुझे बिल्कुल ही गधा समझ लिया है। किंतु अगर तू इस गधे पर बैठ कर अंदर नहीं गया तो हो सकता है तुझे स्वयंवर के लिए अयोग्य घोषित कर दिया जाये। और तेरी भविष्य की सारी योजना धरी की रहे जाये।
कुछ ऐसी तिकड़म भिड़ानी होगी तुझे कि गधे पर भी न बैठना पड़े और इसकी रस्म भी न टूटे। हीहीही!
तभी वहां आ पहुंचा सेनापति ठहाका सिंह—
क्या बात है अतिथि? किस सोच-विचार में डूबे हो। मैं इस राज्य का सेनापति हूं। मेरा नाम ठहाका सिंह है। मुझे बताओ!
ओह! सेनापति जी अच्छा हुआ जो आप आ गए दरअसल मैं यही सोच रहा था कि...
... कैसे बताऊं?
बांकेलाल सेनापति के कान में फुसफुसाया—
खुसर पुसर हीहीही!
ओह! ये बात। हीहीही!

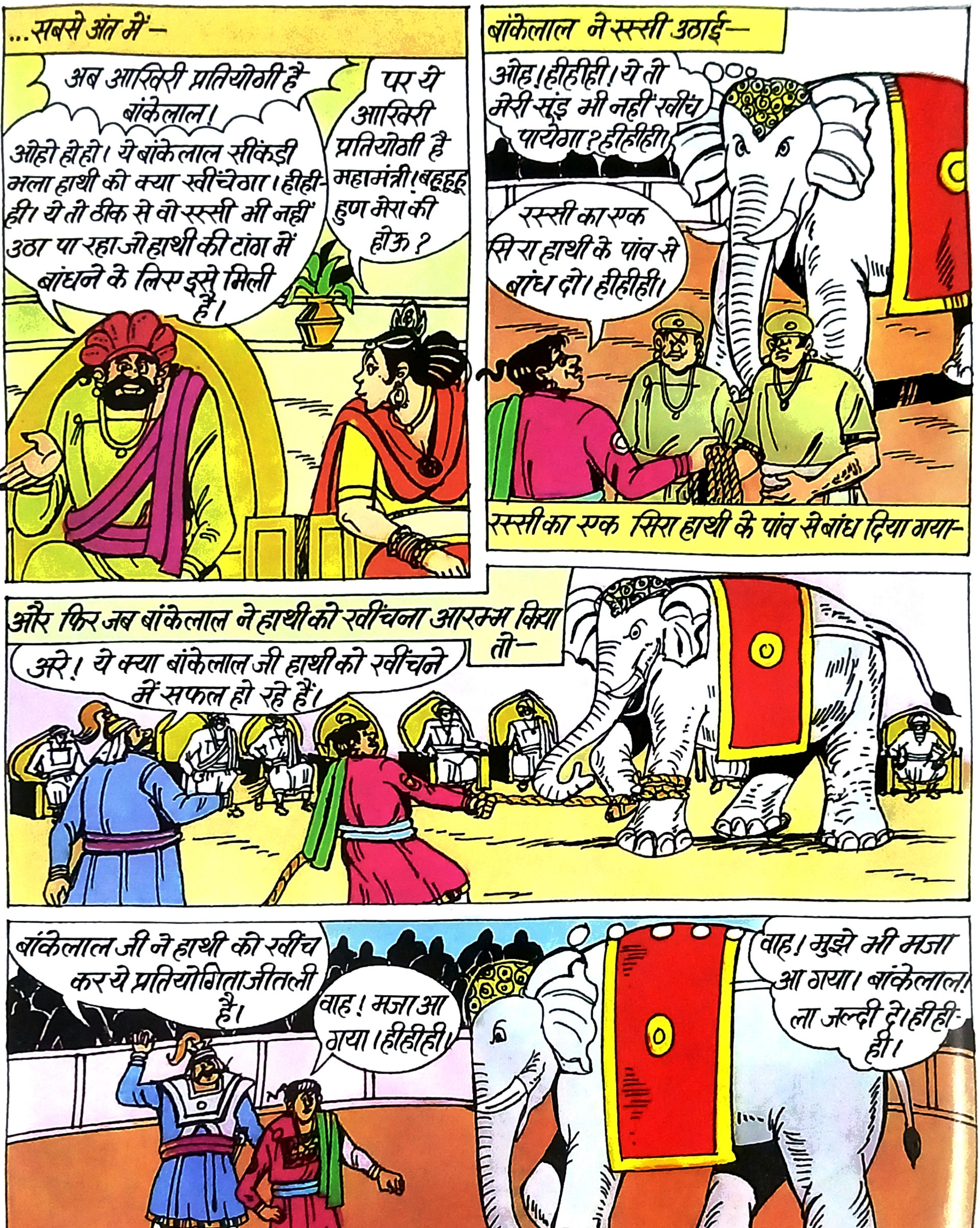

सैनिको। बांकेलाल जी को दाएं बाएं से उठाकर आतिथिशाला ले जाओ। हीहीही !
वाह बन गया काम।
रानी रूपकंवर ये देखकर क्रोधित हो उठी-
अरे ये क्या? इसे सैनिक उठाकर क्यों ले जा रहे हैं?
महामंत्री। जल्दी से सेनापति को यहां बुलाओ। ये सब उसके कहने पर हुआ है।
अभी जाता हूं महारानी जी!
जल्दी ही-
सेनापति! तुमने हमारे नियम को भंग क्यों किया?
मैंने कोई नियम भंग नहीं किया महारानी जी! हीहीही!...
...दरअसल उसने जब मुझे ये बताया कि विशालगढ़ में सब उसे प्यार से गधा कहते हैं तो मैंने सोचा कि गधे को गधे पर बिठाना ठीक नहीं। हीहीही।
वाह! वो तो बना बनाया गधा है
महारानी जी! सेनापति ने उसे गधे पर अंदर न भेज कर कोई भूल नहीं की। हीहीही।
ओह! ठीक है। जाओ पर अब स्वयंवर में कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिये।


अगले दिन-
स्वयंवर में आये सभी प्रतियोगी अतिथियों का स्वागत है।
आप सब को एक-एक करके चार प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना होगा!
इन प्रतियोगिताओं में विजेता रहने वाले प्रतियोगी को ही श्रेष्ठ माना जायेगा। रानी रूपकंवर का विवाह उसी से होगा। प्रतियोगिता में असफल रहने वाले प्रतियोगियों को महारानी जी के विशेष मुंह लगे दहाड़ू को भोजन कराने का सुअवसर प्रदान किया जायेगा। हीहीही।
तो फिर होती है प्रतियोगिता आरम्भ। सेनापतिजी आपको प्रतियोगिताओं के विषय में बताएंगे!


प्रथम प्रतियोगिता है हाथी खेंच प्रतियोगिता! हीहीही
इस प्रतियोगिता में सभी प्रतियोगियों को एक-एक मोटी रस्सी दी जायेगी...
...इस रस्सी से उन्हें अकेले ही हाथी खींचना होगा। हीहीही
ब... बाप रे। बेटा बांके! तू तो लगता है कि प्रथम प्रतियोगिता में ही स्वयंवर से बाहर हो जायेगा।
बूहूहू।
प्रथम प्रतियोगिता आरम्भ हुई—
तो सर्वप्रथम आपके सम्मुख हैं पहलवानपुरी के योद्धा ताकतसिंह।
अबे खींच, खींच हीहीही।
खींचकर रहूंगा। गुर्रर्र।


अबे जा। हीहीही।
ये बेईमानी है। हाथी मुझे खींचना था। बहूहूहू। हाथी ने मुझे क्यों खींचा?
हाथी के पांव में दूसरी रस्सी बांध दी गई-
अब आ रहे हैं संसार के सबसे भारी भरकम शरीर के स्वामी पर्वत सिंह।
कहते हैं इनमें दस हाथियों का बल है अब ये खींचेंगे एक हाथी को। हीहीही।
इसे तो मैं उंगली से ही खींच दूंगा। हीहीही!
पर्वत सिंह अपनी एक उंगली से हाथी को खींचेंगे।
तेरे जैसे दस मिलकर मुझे नहीं खींच पायेंगे। हीहीही।
ओह!, लगता है हाथ की ताकत लगानी ही पड़ेगी।
पर्वत सिंह अब एक हाथ की ताकत लगा कर हाथी को खींचेंगे। हीहीही।
ओह! ये तो हाथ की पूरी ताकत लगाने से भी नहीं खिंच रहा लगता है। दोनों हाथ लगाने पड़ेंगे।
सोच बांके, सोच, वरना सारी योजना धरी की धरी रह जायेगी।


पर्वतसिंह अब दोनों हाथों की ताकत लगाकर हाथी को खींचेंगे। हीहीही।
हम्फ!
सूझ गई तरकीब। लघुशंका का बहाना बनाकर मुझे थोड़ी देर के लिये यहां से जाना होगा। हीहीही।
...और ये क्या? ये तो हाथी ही पर्वतसिंह को खींचने लगा। हीहीही।
कभी उंगली से खींच रहा है। कभी एक हाथ से कभी दोनों हाथों से। अबे दूसरों को भी सामने आने देगा या नहीं। गुर्र्र्र।
लानत है मेरी ताकत पर। बूहूहूहू।
जबकि बांकेलाल सेनापति से आज्ञा लेकर वहां से भागा—
जल्दी कर बेटा बांकेलाल! सभी प्रतियोगियों के धराशायी होने से पहले ही तुझे वो काम पूरा करके वापस लौट आना है। हीहीही।
रानी रूपकंवर अपने विशेष कक्ष से इस प्रतियोगिता को देख रही थी।
इस हाथी को तो कोई खींच ही नहीं पा रहा महामंत्री! कहीं मैं कुंआरी न रह जाऊं।
आप फिक्र न करें रानी जी! फिर मैं तो हूं। हीहीही।
मैं आज्ञाकारी भी हूं। हीहीही।


...सबसे अंत में —
अब आखिरी प्रतियोगी है बांकेलाल।
ओहो हीहो। ये बांकेलाल सींकड़ी भला हाथी की क्या खींचेगा। हीही-ही। ये तो ठीक से वो रस्सी भी नहीं उठा पा रहा जो हाथी की टांग में बांधने के लिए इसे मिली है।
पर ये आखिरी प्रतियोगी है महामंत्री! बहूहूहू हुण मेरा की होऊ?
बांकेलाल ने रस्सी उठाई—
ओह! हीहीही! ये तो मेरी सूंड भी नहीं खींच पायेगा? हीहीही।
रस्सी का एक सिरा हाथी के पांव से बांध दो। हीहीही।
रस्सी का एक सिरा हाथी के पांव से बांध दिया गया—
और फिर जब बांकेलाल ने हाथी को खींचना आरम्भ किया तो—
अरे! ये क्या बांकेलाल जी हाथी को खींचने में सफल हो रहे हैं।
बांकेलाल जी ने हाथी को खींच कर ये प्रतियोगिता जीत ली है।
वाह! मजा आ गया। हीहीही।
वाह! मुझे भी मजा आ गया। बांकेलाल! ला जल्दी दे। हीही-ही।

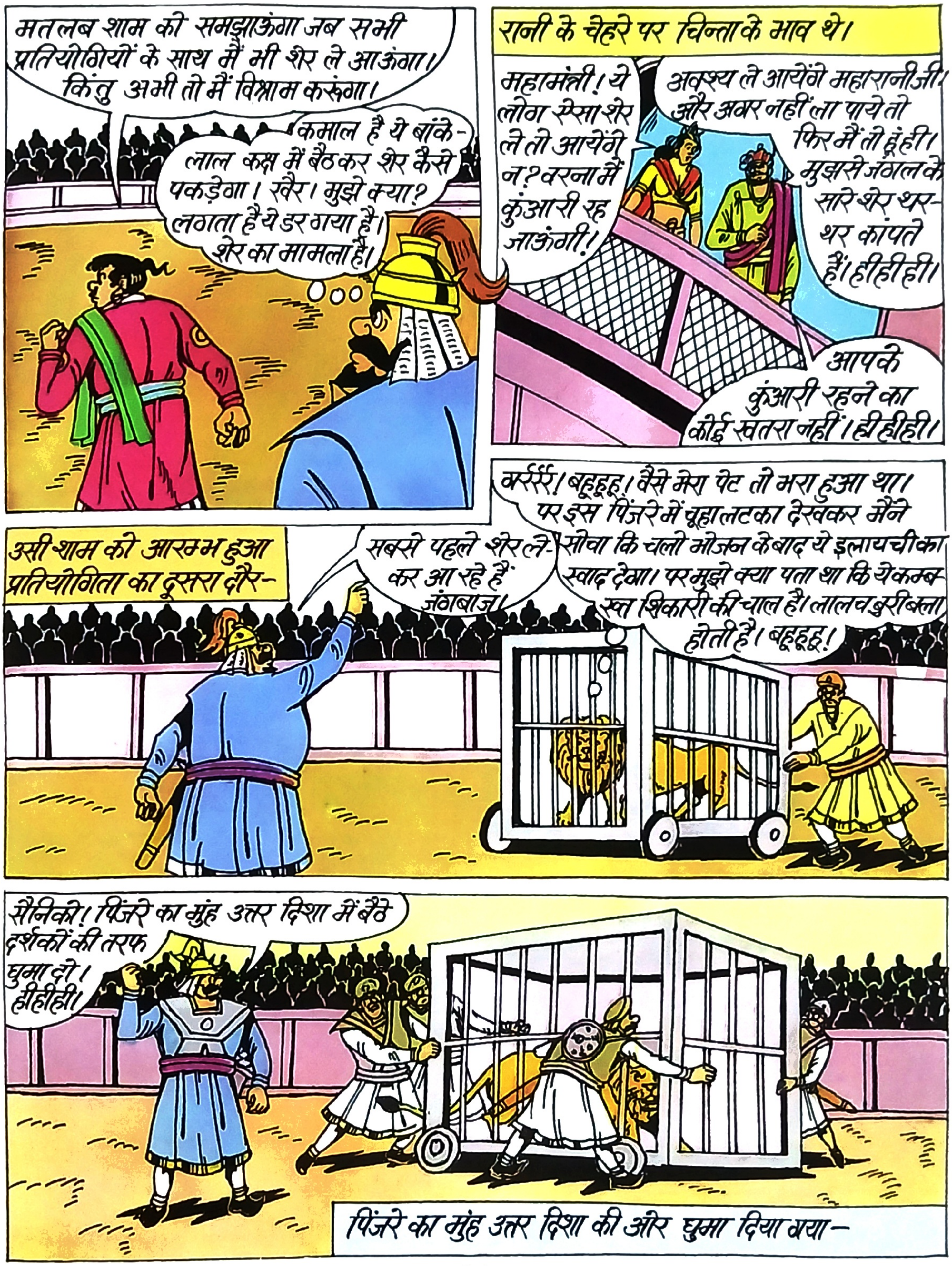

रानी रूपकंवर भी प्रसन्न हो उठी –
वाह! सुकड़ी सा दिखने वाला ये बांकेलाल तो कमाल का बलशाली निकला महामंत्री! इसने तो हाथी को कुछ ही पलों में खींच दिया। चलो मैं कुंआरी रहने से बच गई। हीहीही।
हां। पर मेरा पत्ता कट गया। हुण मेरा की होऊ बादशाओ? बुहूहू।
बांकेलाल! यह प्रतियोगिता तो तुमने जीत ली है, अब तो बता दो कि तुम किस चक्की का पिसा आटा खाते हो।
ये आटे का नहीं, दिमाग का कमाल है।
गन्ना हाथी का सबसे प्रिय आहार होता है।
मैंने अपनी रस्सी पर गन्ने का रस लगा दिया था और जेबों में रख ली थी गन्ने की गंडेरियां। जिनकी गंध पाकर हाथी खुद ही मेरी तरफ खिंचता चला आया हीही ही।
बुहुहू! ये बात मेरे दिमाग में क्यों नहीं आई?
सेनापति ने घोषणा की –
दूसरी प्रतियोगिता कल होगी।
अब मुझे कल होने वाली प्रतियोगिता की प्रतीक्षा रहेगी। हीहीही। लगता है यहां मेरा भाग्य मेरा साथ देगा।

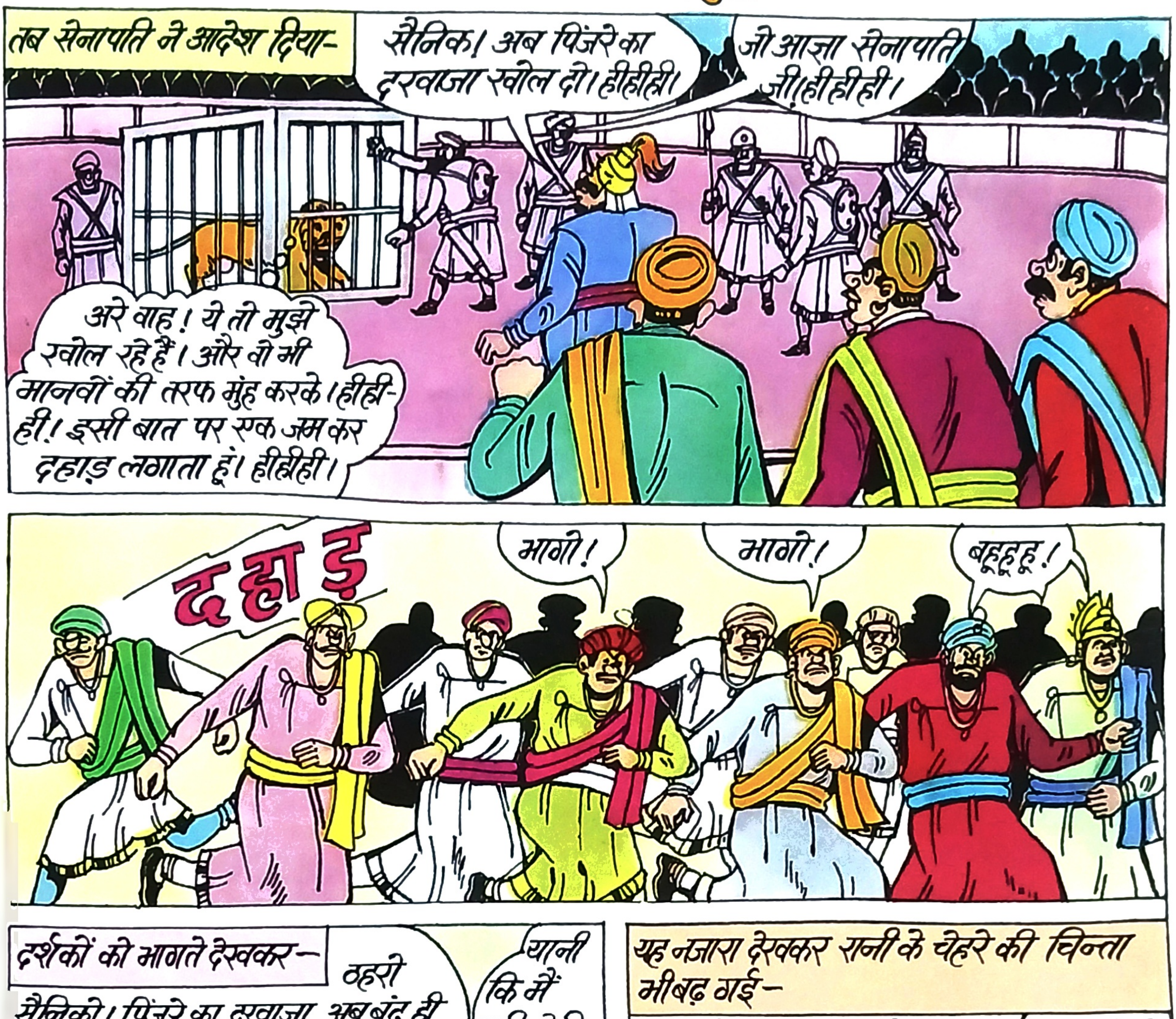

पर ऐसे बदनसीब लोग भी थे, जिन लोगों का भाग्य उनका साथ नहीं दे रहा था—
हीहीही! डायन रानी को चाहिये दांत।
वो भी एक नहीं, दो नहीं...
...पूरे छत्तीस हीहीही।
आह! अब मैं खाऊंगा कैसे? बहूहूहू।
राज्य में गम्भीर समस्या सिर उठा रही थी—
सेनापतिजी! हम दंद बोड़े हो गए। बहूहूहू।
सेनापति जी! हमें डायन रानी से बचाईये। अगर उसने हमारी भी बत्तीसियां तोड़ डालीं तो क्या होगा?
आप लोग निश्चित होकर जाएं। मैं डायन रानी का पता लगाकर उसे मारने की पूरी चेष्टा करूंगा।
कमाल है! आखिर इतने सारे जबड़ों का डायन रानी करेगी क्या?
महारानी जी की इस बारे में फौरन सूचित करना होगा।


फिर जब सेना पति ने रानी रूप कंवर को डायन रानी के विषय में बताया तो—
इसमें घबराने की क्या बात है सेनापति!
ऐसा करके डायन रानी हमारा व राज्य का भला कर रही है।
क्योंकि जब दांत ही नहीं होंगे तो लोग खाद्यांन का उपयोग कम से कम करेंगे और हमारे राज्य को दूसरे राज्यों से खाद्यांन खरीदने की भी जरूरत नहीं रहेगी। हीहीही
सेनापति को रानी से ऐसे ही जवाब की अपेक्षा थी—
ओह! लगता है मुझे ही कुछ करना होगा। अन्यथा बेचारी निर्दोष प्रजा पोपली हो जायेगी। कल को ये संकट बढ़ भी सकता है फिर पता नहीं डायन रानी ऐसा कर क्यों रही है।
किंतु सेनापति के कंधों पर अभी स्वयंवर को निबटाने की जिम्मेदारी भी थी—
प्रतियोगिता के दूसरे दौर में आज होगी दिमाग व बहादुरी की परीक्षा। ये प्रतियोगिता दो चरणों में पूर्ण होगी।



प्रथम चरण में सभी प्रतियोगियों को जिन्दा शेर लाना होगा
वाह! ये तो बड़ी आसान प्रतियोगिता है। क्योंकि मैंने बड़े-बड़े शेर मारे हैं।
मेरा एक कक्ष तो सिंहों की खालों से भरा पड़ा है। हीहीही।
!!
अब आगे भी तो सुन लो। ये शेर ऐसा होना चाहिये जिसके आसपास जाने या छूने पर भी कोई भयभीत न हो। सभी प्रतियोगी शेर ले आयेंगे तब होगा दूसरा चरण पूरा। हीहीही।
आंय! भला ये कैसे हो सकता है?
शेर का तो दूसरा नाम ही भय है। बुहुहुहु।
किंतु प्रतियोगिता है तो ऐसा शेर लाना तो पड़ेगा ही।
!!
!!
बांकेलाल जी! आप शेर लाने नहीं जायेंगे क्या?
जाऊंगा पर जंगल में नहीं जाऊंगा। हीहीही।
क्या मतलब? शेर तो जंगल में ही मिलता है।

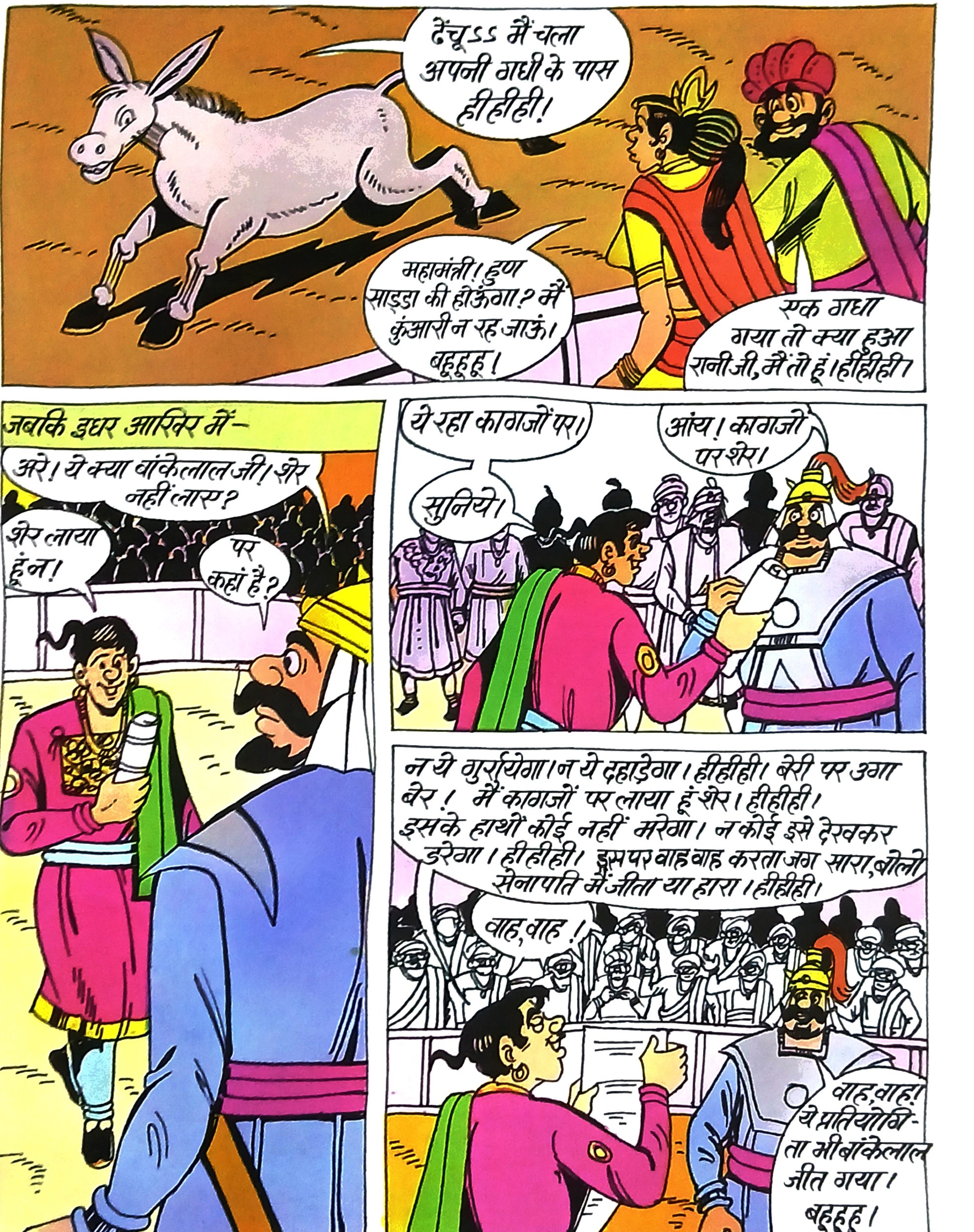

मतलब शाम को समझाऊंगा जब सभी प्रतियोगियों के साथ मैं भी शेर ले आऊंगा। किंतु अभी तो मैं विश्राम करूंगा।
कमाल है ये बांके-लाल कक्ष में बैठकर शेर कैसे पकड़ेगा। खैर। मुझे क्या? लगता है ये डर गया है। शेर का मामला है।
रानी के चेहरे पर चिन्ता के भाव थे।
महामंत्री! ये लोग ऐसा शेर ले तो आयेंगे न? वरना मैं कुंआरी रह जाऊंगी!
अवश्य ले आयेंगे महारानीजी। और अगर नहीं ला पाये तो फिर मैं तो हूं ही। मुझसे जंगल के सारे शेर थर-थर कांपते हैं। हीहीही।
आपके कुंआरी रहने का कोई खतरा नहीं। हीहीही।
उसी शाम को आरम्भ हुआ प्रतियोगिता का दूसरा दौर-
सबसे पहले शेर लेकर आ रहे हैं जंगबाज!
गर्रर्र! बहूहूहू। वैसे मेरा पेट तो भरा हुआ था। पर इस पिंजरे में चूहा लटका देखकर मैंने सोचा कि चलो भोजन के बाद ये इलायची का स्वाद देगा। पर मुझे क्या पता था कि ये कम्बख्त शिकारी की चाल है। लालच बुरी बला होती है। बहूहूहू!
सैनिकों! पिंजरे का मुंह उत्तर दिशा में बैठे दर्शकों की तरफ घुमा दो। हीहीही!
पिंजरे का मुंह उत्तर दिशा की ओर घुमा दिया गया-


तब सेनापति ने आदेश दिया-
सैनिक। अब पिंजरे का दरवाजा खोल दो। हीहीही।
जो आज्ञा सेनापति जी।ही ही ही।
अरे वाह ! ये तो मुझे खोल रहे हैं। और वो भी मानवों की तरफ मुंह करके। हीही-ही। इसी बात पर एक जम कर दहाड़ लगाता हूं। हीहीही।
दहाड़
भागो!
भागो!
बहूहूहू!
दर्शकों को भागते देखकर-
ठहरो सैनिको। पिंजरे का दरवाजा अब बंद ही रहने दो। हीहीही। क्षमा करें श्रीमान जंगबाज आपके शेर को देखकर लोग भयभीत होकर भाग गए हीहीही!
यानी कि मैं प्रतियोगिता हार गया। बहूहूहू!
यह नजारा देखकर रानी के चेहरे की चिन्ता भी बढ़ गई-
महामंत्री जी, भला ऐसा कौन सा शेर होगा जिसे देखकर कोई डरेगा नहीं। लगता है मैं कुंआरी ही रह जाऊंगी। हुण अप्पां दा की होऊ?
महारानी जी! ऐसा शेर है। और वो शेर हूं मैं। हीहीही


अब आपके सामने आ रहे हैं जिगर-पुरी के राजकुमार जिगर मुरादा-बादी हीहीही!
अबे मुंह तो खोल बुहहू हू।
हीहीही! मेरे शेर को देखकर कोई भी नहीं डरेगा। क्योंकि मुझे देखकर कोई भी शेर मेरा पालतू बन जाता है। हीहीही!
पर तुमने शेर के मुंह पर पट्टी क्यों बांध रखी है?
प...प...पर आसपास कोई गधा तो नहीं है। मेरा शेर गधे को देखकर गुस्से में आ जाता है।
बुहहूहू! पट्टी हटा बे।
पिंजरे का दरवाजा खोलने से पहले इसके मुंह से पट्टी तो हटानी ही पड़ेगी! हीहीही!
राजकुमार जिगर मुरादाबादी को शेर के मुंह से पट्टी हटानी ही पड़ी।
अब आप कहें तो मैं शेर को साथ लेकर पिंजरे से बाहर भी आ जाऊं। हीहीही।
हां! मैं दरवाजा खोल देता हूं।
राजकुमार शेर के साथ बाहर आ गया—
देखा सेनापति जी! इस शेर को देखकर कोई भी नहीं डर रहा। अबे! अब बाहर तो निकल मुझसे इतना भी क्या डरना। हीहीही!
आंय! ये कैसा शेर है?



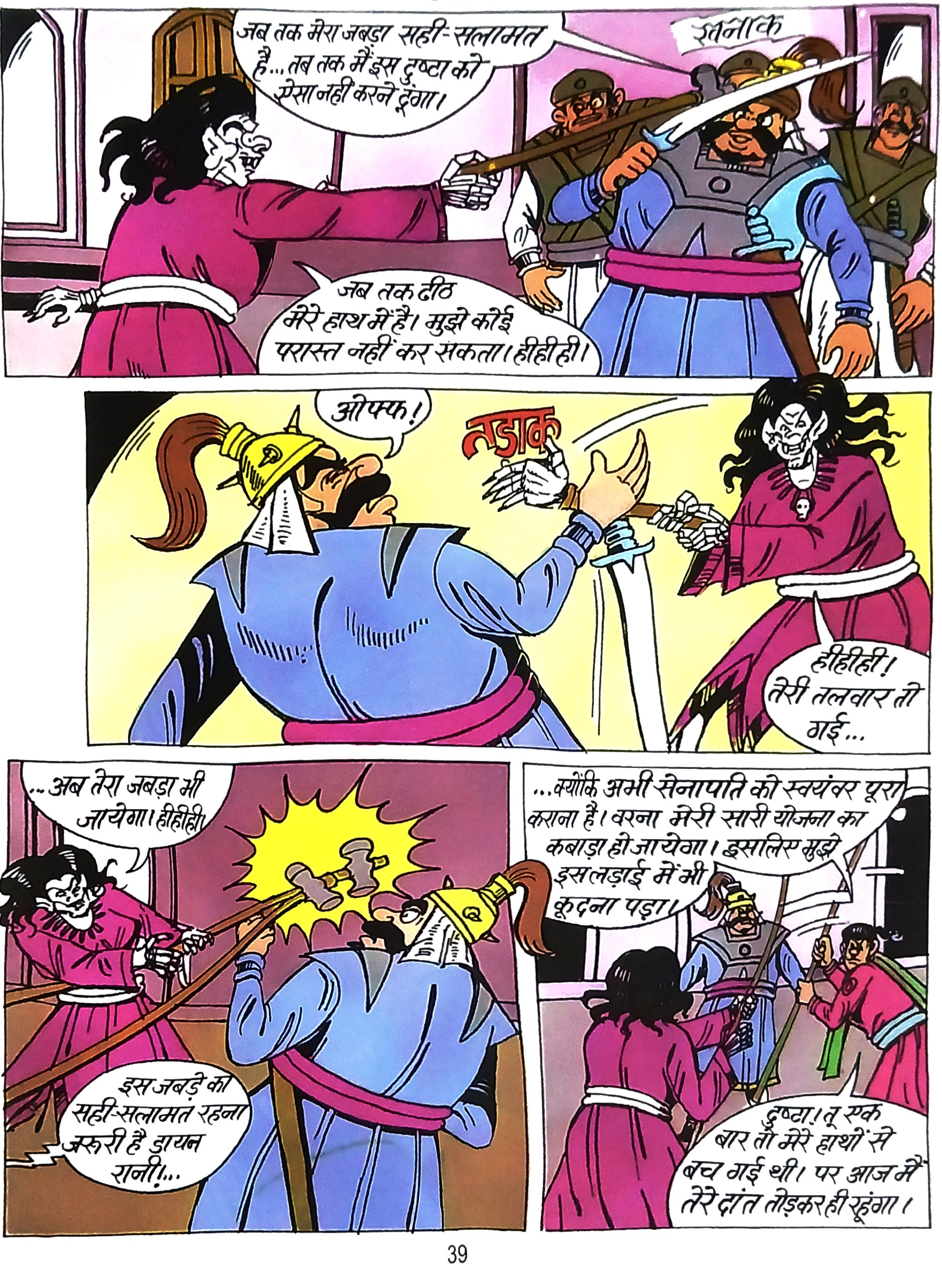
तभी दूर कहीं गूंज उठा वह स्वर -
ढैंचू ऽऽऽ ढैंचू ऽऽऽ
नहीं! इस गधे की चुप कराओ। बहूहूहू।
राजकुमार जिगर फुर्ती के साथ अपने शेर की तरफ झपटा -
अब मुझे इसके मुंह पर पट्टी बांध देनी चाहिए वरना सारा खेल खराब हो जायेगा। बहूहूहू।
लेकिन इससे पहले कि वह पट्टी से शेर का मुंह बांध देता...
ढैंचू! ढैंचू!
हो गया बेड़ागर्क।
आंय!
सेनापति आगे बढ़ा और -
ओह! तो ये रहस्य है इस पालतू शेर का। हीहीही।
मर गए। योजना असफल हो गई।


ढेंचू ऽऽ मैं चला अपनी गधी के पास ही ही ही!
महामंत्री! हुण साड्डा की होऊंगा? मैं कुंआरी न रह जाऊं। बहूहूहू।
एक गधा गया तो क्या हुआ रानी जी, मैं तो हूं। हीहीही।
जबकि इधर आखिर में–
अरे! ये क्या बांकेलाल जी! शेर नहीं लाए?
शेर लाया हूं न!
पर कहां है?
ये रहा कागजों पर।
सुनिये।
आंय! कागजों पर शेर।
न ये गुर्रायेगा। न ये दहाड़ेगा। हीहीही। बेरी पर उगा बेर! मैं कागजों पर लाया हूं शेर। हीहीही। इसके हाथों कोई नहीं मरेगा। न कोई इसे देखकर डरेगा। हीहीही। इसपर वाह वाह करता जग सारा, बोलो सेनापति मैं जीता या हारा। हीहीही।
वाह, वाह!
वाह, वाह! ये प्रतियोगिता भी बांकेलाल जीत गया। बहूहूहू।


उस प्रतियोगिता में भी बांकेलाल को विजयी होता देख रानी प्रसन्न हो उठी—
महामंत्री चमचा सिंह! मैं कुंआरी रहने से बच गई! हीहीही।
बहूहूहू। पर मेरा पत्ता कट गया। मैं मैं रास्ते से हट गया। बहूहूहू!
जबकि बांकेलाल की लगातार दूसरी विजय ने उसे नागरिकों की निगाहों में चढ़ा दिया—
वीरों बांकेलाल
जिन्दाबाद
वाह! तिकड़में जिन्दाबाद। हीहीही।
इधर मुसीबत अब जंगल से निकल कर नगर की गलियों में आ गई थी—
ओह! हीहीही। रात्रि की शीतल वायु से निद्रा-मगन इन लोगों को पता ही नहीं कि मैं इनके सिर पर खड़ी हूं।..
...क्योंकि जब तक मुझे छत्तीस दांतों वाला जबड़ा नहीं मिल जाता...
...मैं हरेक का जबड़ा इसी प्रकार तोड़ती रहूंगी। उठबे! मैं सोए हुए पर वार नहीं करती। हीहीही।
आंय! कौन है?

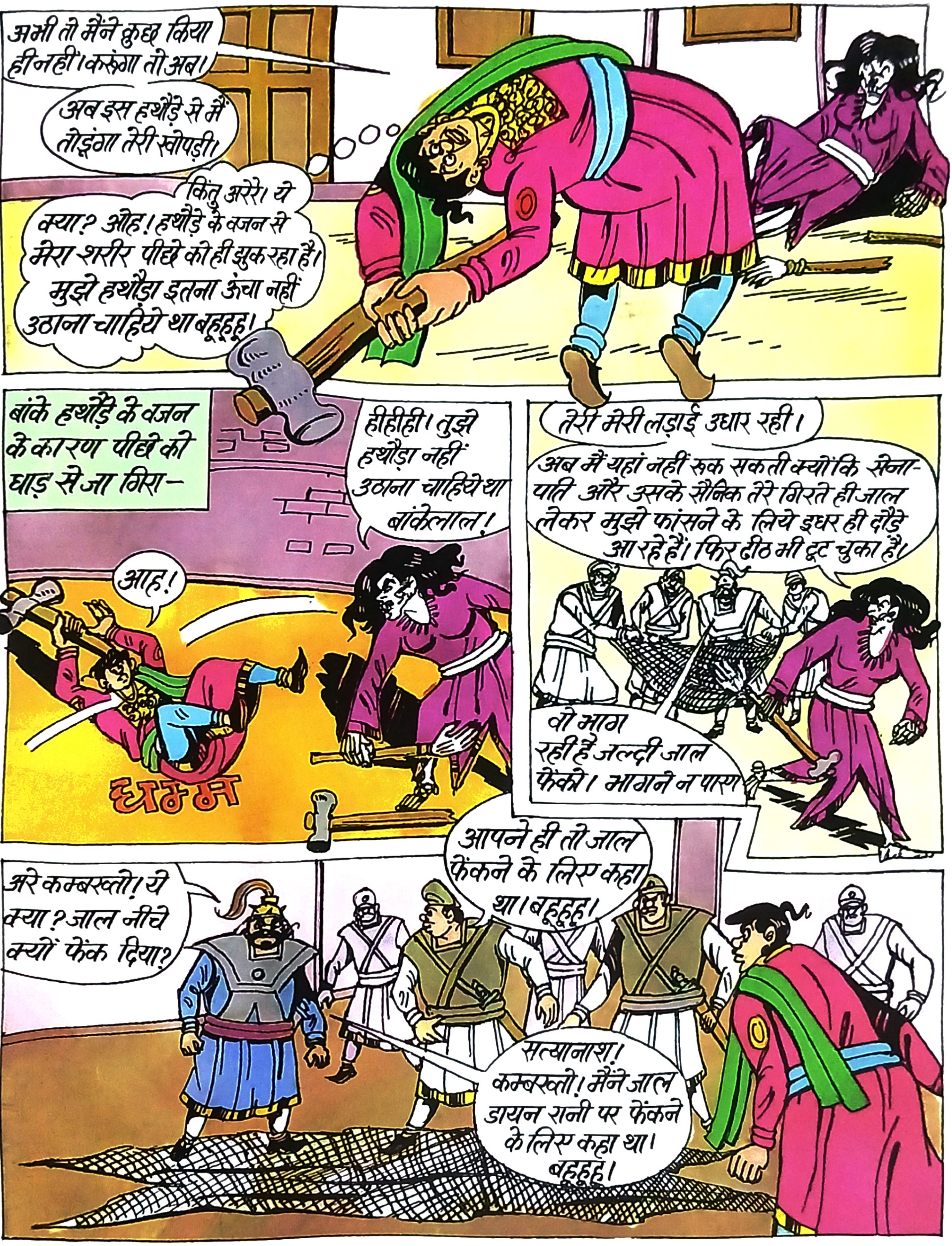

मुझे अच्छी तरह पहचान ले। मैं हूं डायन रानी। हीहीही।
आहह!
तड़ाक
अजी क्या हुआ? बेलन तो मैंने सुबह मारा था। बूहूहूहू!
तेरे भी दांत तोड़ने पड़ेंगे। हीहीही।
तड़ाक
आह!
डर मत मैं तेरे दांत नहीं तोड़ूंगी। हीहीही। क्योंकि तू तो अभी बच्चा है। तेरे तो दूध के दांत भी नहीं टूटे। हीहीही।
बूहूहूहू!
डायन रानी ने दोनों जबड़ों को उठा कर अभी गिनती शुरू भी नहीं की थी कि—
कम्बख्त दुष्टा! अब मैं तोड़ूंगा तेरे दांत।
ओह! कौन? किसमें हुआ इतना साहस जो डायन रानी को मारा।


मैं हूं सेनापति ठह्मका सिंह!
बहुत दिनों से तेरी शैतानी हरकतों की शिकायतें सुन रहा था। आज आखिर मैंने तुझे पा ही लिया दुष्ट!
पकड़ लो इस शैतान की खाला को।
हीहीही! मुझे पकड़ना बच्चों का खेल नहीं। शायद आज तुममें से ही मुझे मिल जाये कोई छत्तीस दांतों का जबड़ा!
आह! मरा!
तड़ाक
कम्बख्तो। अपनी तलवारों से इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालो!
मैंने ढीठ को लम्बा इसलिये ही तो बनाया है...
...ताकि कोई भी तलवार मुझ तक नहीं पहुंच पाए। हीहीही।
तड़ाक
अब ये हमारे जबड़े तोड़ेगी।


जब तक मेरा जबड़ा सही-सलामत है... तब तक मैं इस दुष्टा को ऐसा नहीं करने दूंगा।
सनाक
जब तक दीठ मेरे हाथ में है। मुझे कोई परास्त नहीं कर सकता। हीहीही।
ओफ्फ!
तड़ाक
हीहीही! तेरी तलवार तो गई...
...अब तेरा जबड़ा भी जायेगा। हीहीही
इस जबड़े का सही-सलामत रहना जरूरी है डायन रानी!...
...क्योंकि अभी सेनापति को स्वयंवर पूरा कराना है। वरना मेरी सारी योजना का कबाड़ा ही जायेगा। इसलिए मुझे इस लड़ाई में भी कूदना पड़ा।
दुष्टा! तू एक बार तो मेरे हाथों से बच गई थी। पर आज मैं तेरे दांत तोड़कर ही रहूंगा।



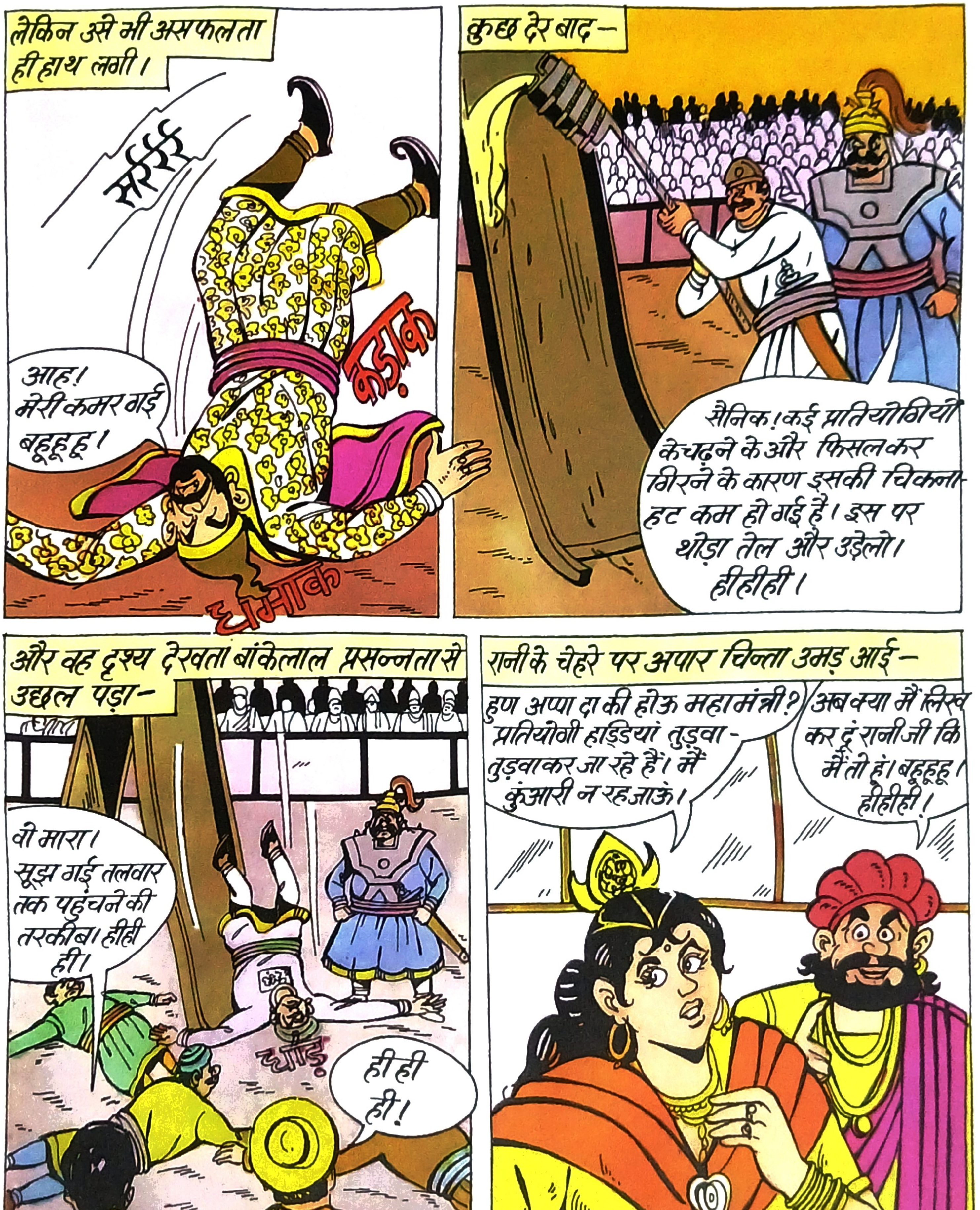
बांकेलाल ने हथौड़ा घुमाया -
तड़ाक
आह!
हीहीही। तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद बांकेलाल! तुमने मेरा वो दांत तोड़ दिया, जो कई दिनों से दर्द कर रहा था हीहीही!
पर अब मैं तेरे वो दांत भी तोड़ दूंगा, जो दर्द नहीं कर रहे थे। पर अब करेंगे। हीही-ही।
पर पहले मेरी लात खा।
बांकेलाल! मैं दो योद्धाओं की लड़ाई के बीच में तब तक नहीं आता जब तक कोई एक परास्त न हो जाए।
अब पहले मैं इस शस्त्र दीठ के ही टुकड़े-टुकड़े कर देता हूं।
नहीं बांकेलाल! हाय नासपीट्टे। ये तूने क्या किया?

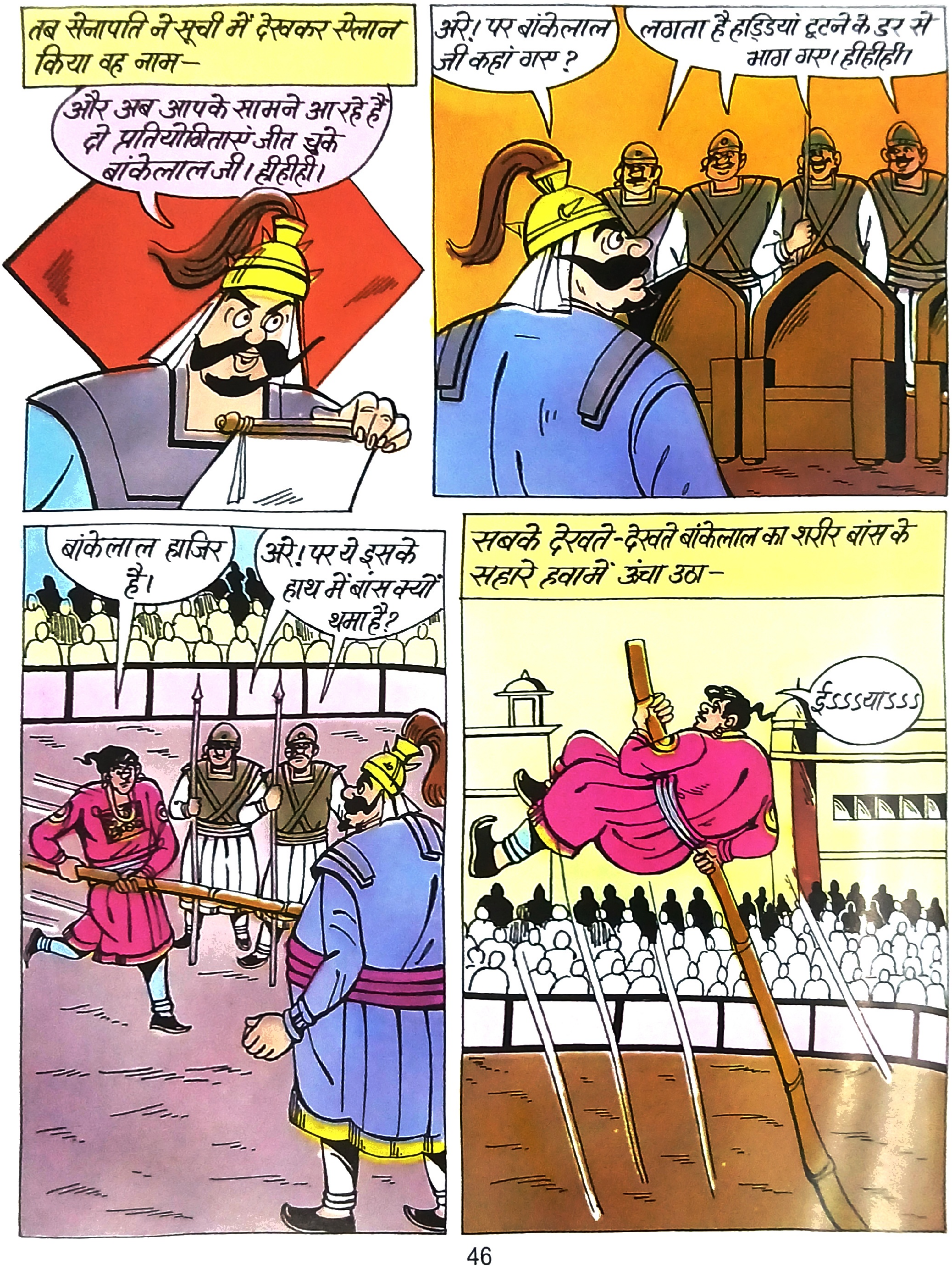

अभी तो मैंने कुछ किया ही नहीं। करूंगा तो अब।
अब इस हथौड़े से मैं तोड़ूंगा तेरी खोपड़ी।
किंतु अरेरे। ये क्या? ओह! हथौड़े के वजन से मेरा शरीर पीछे को ही झुक रहा है। मुझे हथौड़ा इतना ऊंचा नहीं उठाना चाहिये था बहूहूहू।
बांके हथौड़े के वजन के कारण पीछे को धाड़ से जा गिरा—
हीहीही। तुझे हथौड़ा नहीं उठाना चाहिये था बांकेलाल!
आह!
धम्म
तेरी मेरी लड़ाई उधार रही।
अब मैं यहां नहीं रुक सकती क्योंकि सेनापति और उसके सैनिक तेरे गिरते ही जाल लेकर मुझे फांसने के लिये इधर ही दौड़े आ रहे हैं। फिर ढीठ भी टूट चुका है।
वो भाग रही है जल्दी जाल फेंको। भागने न पाए।
अरे कम्बख्तो! ये क्या? जाल नीचे क्यों फेंक दिया?
आपने ही तो जाल फेंकने के लिए कहा था। बहूहूह।
सत्यानाश! कम्बख्तो! मैंने जाल डायन रानी पर फेंकने के लिए कहा था। बहूहूह।

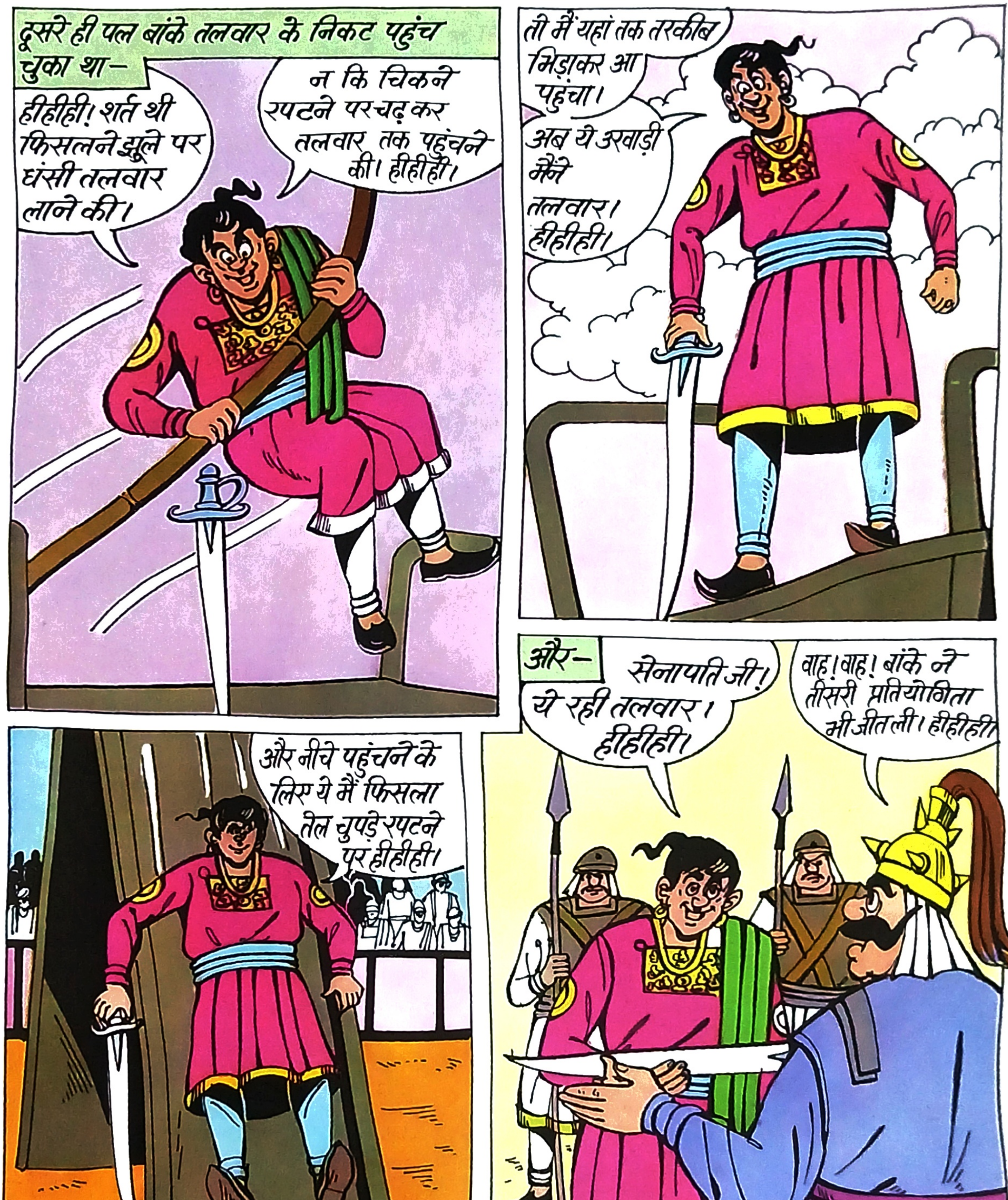

बांकेलाल! डायन रानी अंधेरे में गायब हो गई।
ओह! आपको जाल लाते देख कर मैंने बेकार में ही हथौड़ा पीछे की तरफ गिरा दिया। मैं तो सोच रहा था कि जाल डालकर उसे जिन्दा पकड़ा जाये और उसके पापों का दण्ड सारी प्रजा मिलकर उसे दे। पर अब क्या हो सकता है। हीहीही।
किंतु कुछ भी हो बांकेलाल! आज जिस बहादुरी व हिम्मत के साथ तुमने डायन रानी से मेरे प्राण बचाए और उसका मुकाबला किया ...वो काबिले तारीफ है।
स्वयंवर की दो प्रतियोगिताएं भी तुम जीत चुके हो।
मुझे उम्मीद है कि शेष प्रतियोगिता भी तुम ही जीतोगे।
तब तक वहां एकत्रित हो चुके लोगों में से कोई प्रसन्नता से चिल्लाया -
बांकेलाल ही होगा छत्तीसगढ़ का भावी राजा।
हां बांकेलाल! हम तुम्हारे साथ हैं।
वाह! लोगों पर राजा बनने से पहले मेरी धाक जम रही है। हीहीही।


अगले दिन आरम्भ हुई तीसरी प्रतियोगिता।
तो भाईयो और भाइयो! तीसरी प्रतियो-गिता है ये...
...यानी आपको इस चिकने व फिसलने झूले के आर धंसी तलवार लेकर आनी है... जो ले आयेगा... वो...
...कहलायेगा विजेता।
सबसे पहले मैं जाता हूं।...
बचपन में मैं ऐसे फिसलने पर खूब फिसलता था। तलवार तक पहुंचने के लिए मुझे इस चिकनी फिसलन पर दौड़ लगाकर...
...एक ही सांस में चढ़ जाना होगा।... अरे... ओऽऽह। आह!
ये...ये तो बहुत चिकना है।
क्षमा करें। मैं बताना भूल गया था कि इस पर सरसों का तेल भी चुपड़ा...
...हुआ है। हीहीही।


यह बात सुनते ही बांकेलाल के चेहरे पर चिंता के बादल मंडरा उठे–
कम्बख्तों को तेल चुपड़ने की क्या जरूरत थी?
बांकेलाल! दो प्रतियोगिताएं जीत कर तू जीत के निकट है। अगर ये प्रतियोगिता ना जीत पाया तो सारी मेहनत मिट्टी में मिल जायेगी।
तलवार तक पहुंचने की कोई न कोई तिकड़म तो भिड़ानी ही पड़ेगी।
जबकि इधर–
इस बार तलवार लाने जा रहे हैं अंधेर नगरी के राजा चौपट सिंह।...
वी दौड़ना शुरू कर चुके हैं...
मेरा बचपन मेरे बाग के बन्दरों के साथ गुजरा है...
...मैं इस फिसलने पर पांव रखूंगा ही नहीं...बल्कि एक ही छलांग लगा कर तलवार तक पहुंच जाऊंगा हीऽऽऽ याऽऽऽ आऽऽऽह।

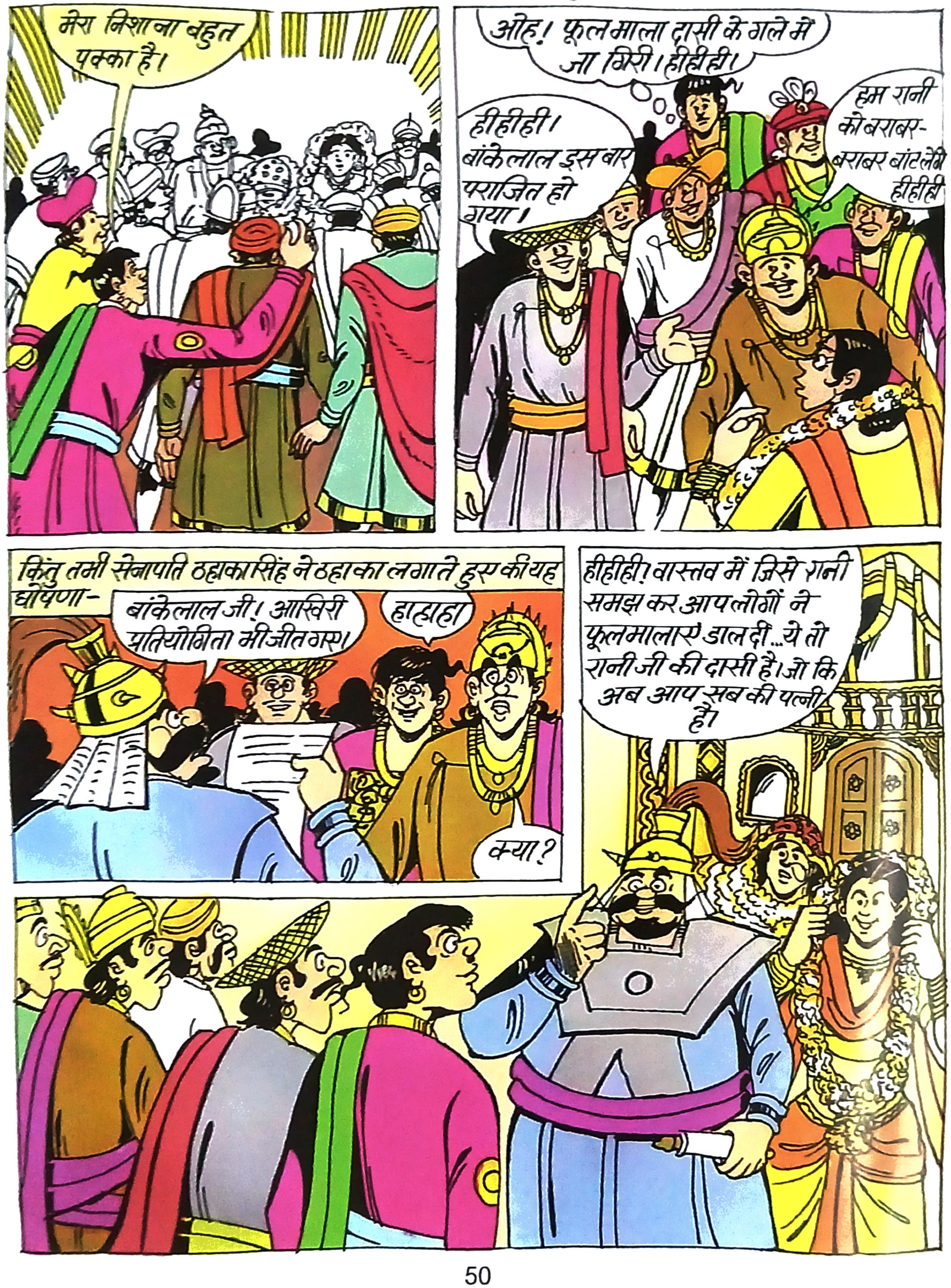

लेकिन उसे भी असफलता ही हाथ लगी।
सर्रर्र
कड़ाक
आह! मेरी कमर गई बहूहूहू।
धमाक
कुछ देर बाद—
सैनिक! कई प्रतियोगियों के चढ़ने के और फिसल कर गिरने के कारण इसकी चिकनाहट कम हो गई है। इस पर थोड़ा तेल और उड़ेलो। हीहीही।
और वह दृश्य देखता बांकेलाल प्रसन्नता से उछल पड़ा—
वी मारा। सूझ गई तलवार तक पहुंचने की तरकीब। हीही ही।
धाड़
ही ही ही!
रानी के चेहरे पर अपार चिन्ता उमड़ आई—
हुण अप्पा दा की होऊ महामंत्री? प्रतियोगी हाड्डियां तुड़वा-तुड़वाकर जा रहे हैं। मैं कुंआरी न रह जाऊं।
अब क्या मैं लिख कर दूं रानी जी कि मैं तो हूं। बहूहूहू! हीहीही!

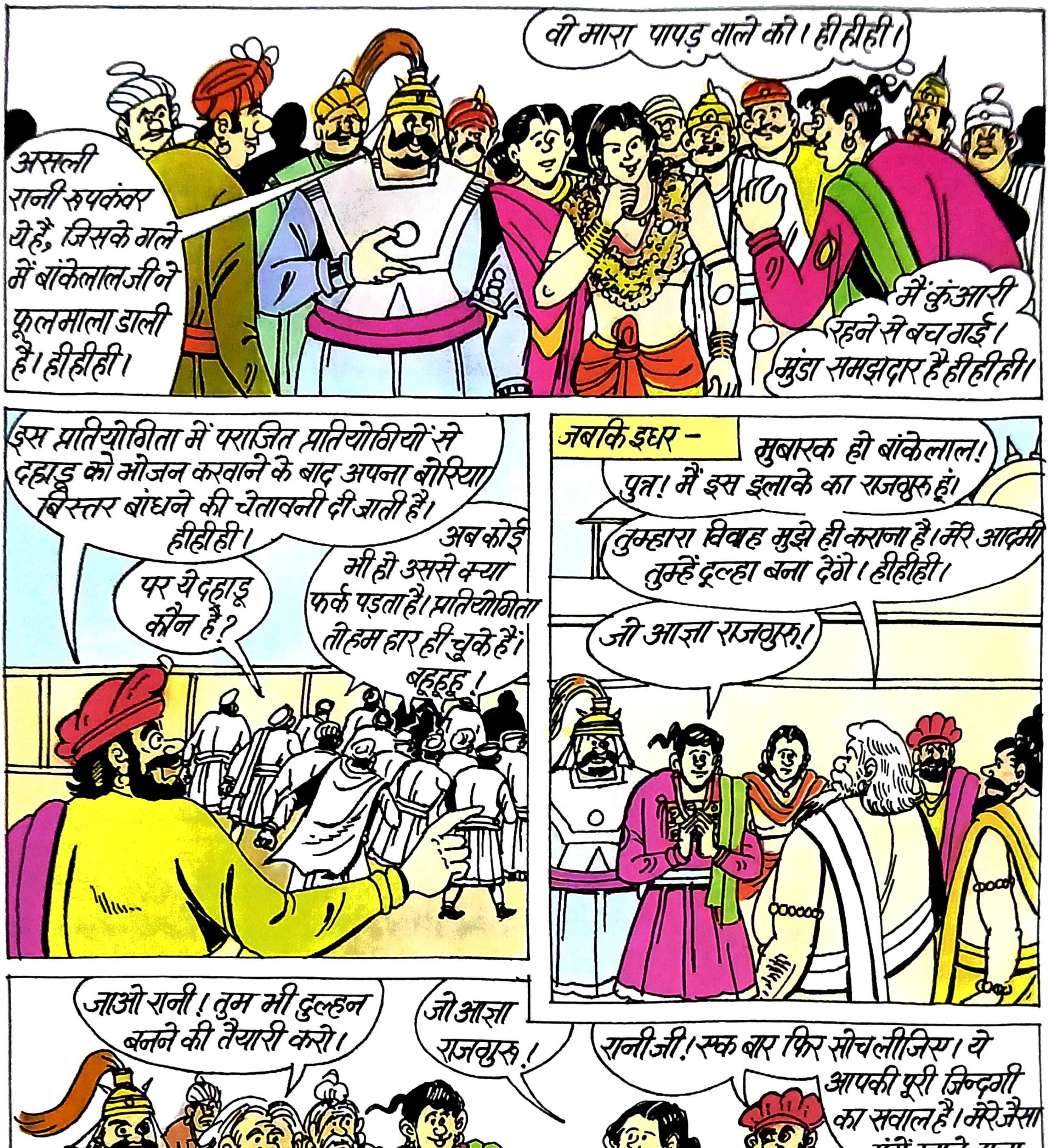

तब सेनापति ने सूची में देखकर ऐलान किया वह नाम–
और अब आपके सामने आ रहे हैं दो प्रतियोगिताएं जीत चुके बांकेलाल जी। हीहीही।
अरे! पर बांकेलाल जी कहां गए?
लगता है हड्डियां टूटने के डर से भाग गए। हीहीही।
बांकेलाल हाजिर है।
अरे! पर ये इसके हाथ में बांस क्यों थमा है?
सबके देखते-देखते बांकेलाल का शरीर बांस के सहारे हवा में ऊंचा उठा–
ईSSSयाSSS


दूसरे ही पल बांके तलवार के निकट पहुंच चुका था–
हीहीही! शर्त थी फिसलने झूले पर धंसी तलवार लाने की।
न कि चिकने रपटने पर चढ़ कर तलवार तक पहुंचने की। हीहीही।
तो मैं यहां तक तरकीब भिड़ाकर आ पहुंचा।
अब ये उखाड़ी मैंने तलवार। हीहीही।
और नीचे पहुंचने के लिए ये मैं फिसला तेल चुपड़े रपटने पर हीहीही।
और–
सेनापति जी! ये रही तलवार। हीहीही।
वाह! वाह! बांके ने तीसरी प्रतियोगिता भी जीत ली। हीहीही।

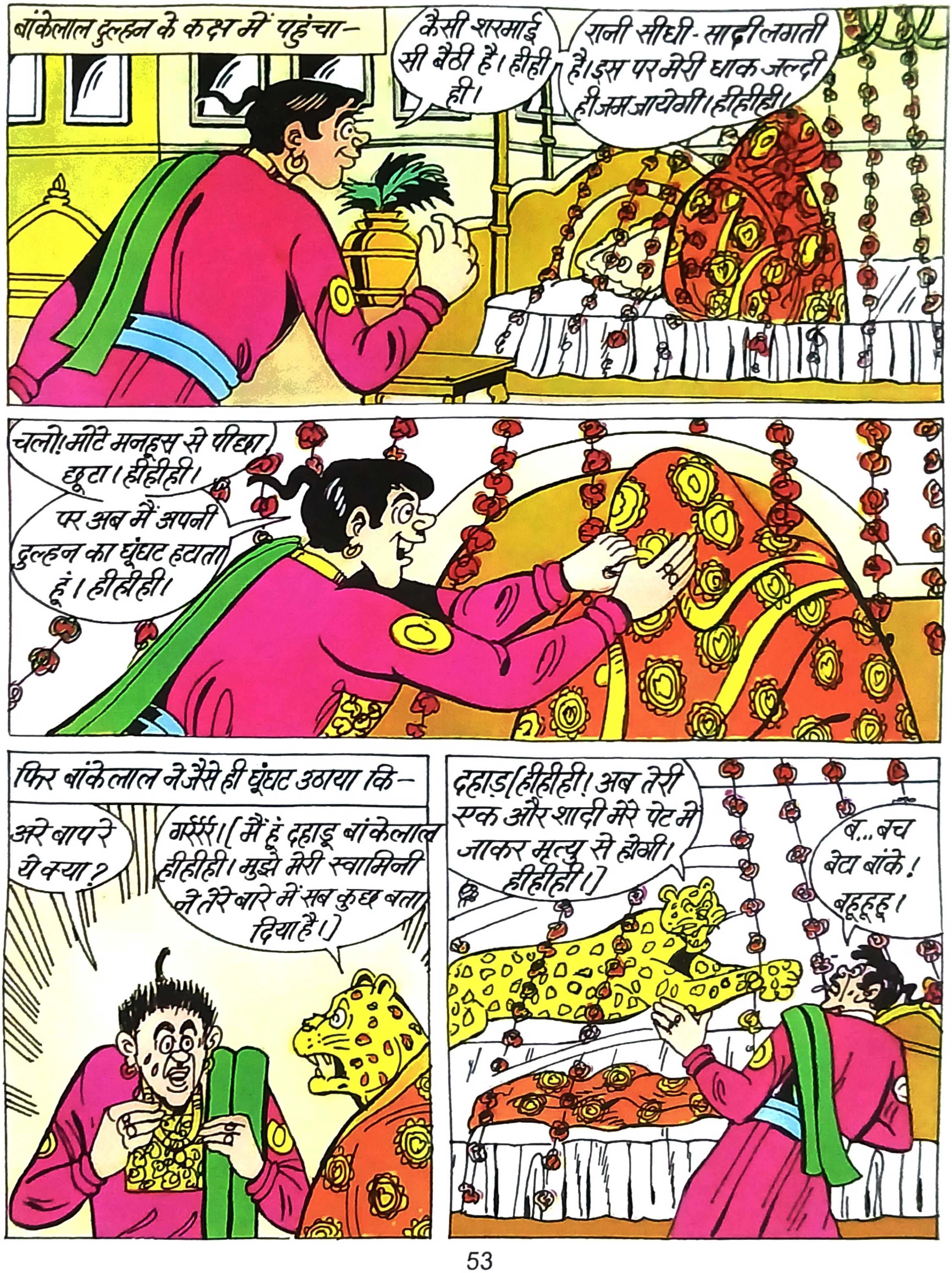

महामंत्री जी! बांकेलाल ये प्रतियोगिता भी जीत गया। मैं कुंवारी रह जाने से बच गई। हीहीही।
हां! पर मेरा पत्ता एक बार फिर कट गया। हुण साड्डा की होऊ? बहूहूहू।
इधर सेनापति ने ऐलान किया–
किंतु श्रीमान! अभी कोई प्रतियोगी यहां से जाएगा नहीं। क्योंकि चौथी और आखरी प्रतियोगिता भी अभी होगी।
इस प्रतियोगिता में रानी अपनी दासी के साथ पधारेंगी। जो भी प्रतियोगी उन्हें फूल माला पहना देगा... वही विजेता समझा जायेगा। किंतु फूल माला गले में डालना आवश्यक है। सैनिकों सभी प्रतियोगियों को फूल मालाएं बांट दो। हीहीही।
सभी प्रतियोगियों को फूल मालाएं बांट दी गईं–
बामुलाइजा! बाअदब! होशियार! रानी जी पधार रही हैं।


रानी जी को देखते ही सभी प्रतियोगी उनकी तरफ दौड़ पड़े –
रानी जी को फूल माला पहले मैं पहनाऊंगा।
पहले मैं।
पहले मैं।
पहले मैं, पहले मैं के चक्कर में रानी फूल मालाओं से ढकती चली गई।
बहूहुहू!
अब बचा बांकेलाल –
बांकेलाल! तुम्हारी फूलमाला डालने के लिये तो जगह ही नहीं बची।
मेरी माला भी जरूर डलेगी!


मेरा निशाना बहुत पक्का है।
ओह! फूलमाला दासी के गले में जा गिरी। हीहीही।
हीहीही। बांकेलाल इस बार पराजित हो गया।
हम रानी को बराबर-बराबर बांटलेंगे हीहीही
किंतु तभी सेनापति ठहाका सिंह ने ठहाका लगाते हुए की यह घोषणा-
बांकेलाल जी! आखिरी प्रतियोगिता भी जीत गए।
हाहाहा
क्या?
हीहीही! वास्तव में जिसे रानी समझ कर आप लोगों ने फूलमालाएं डाल दीं...ये तो रानी जी की दासी है। जो कि अब आप सब की पत्नी है।

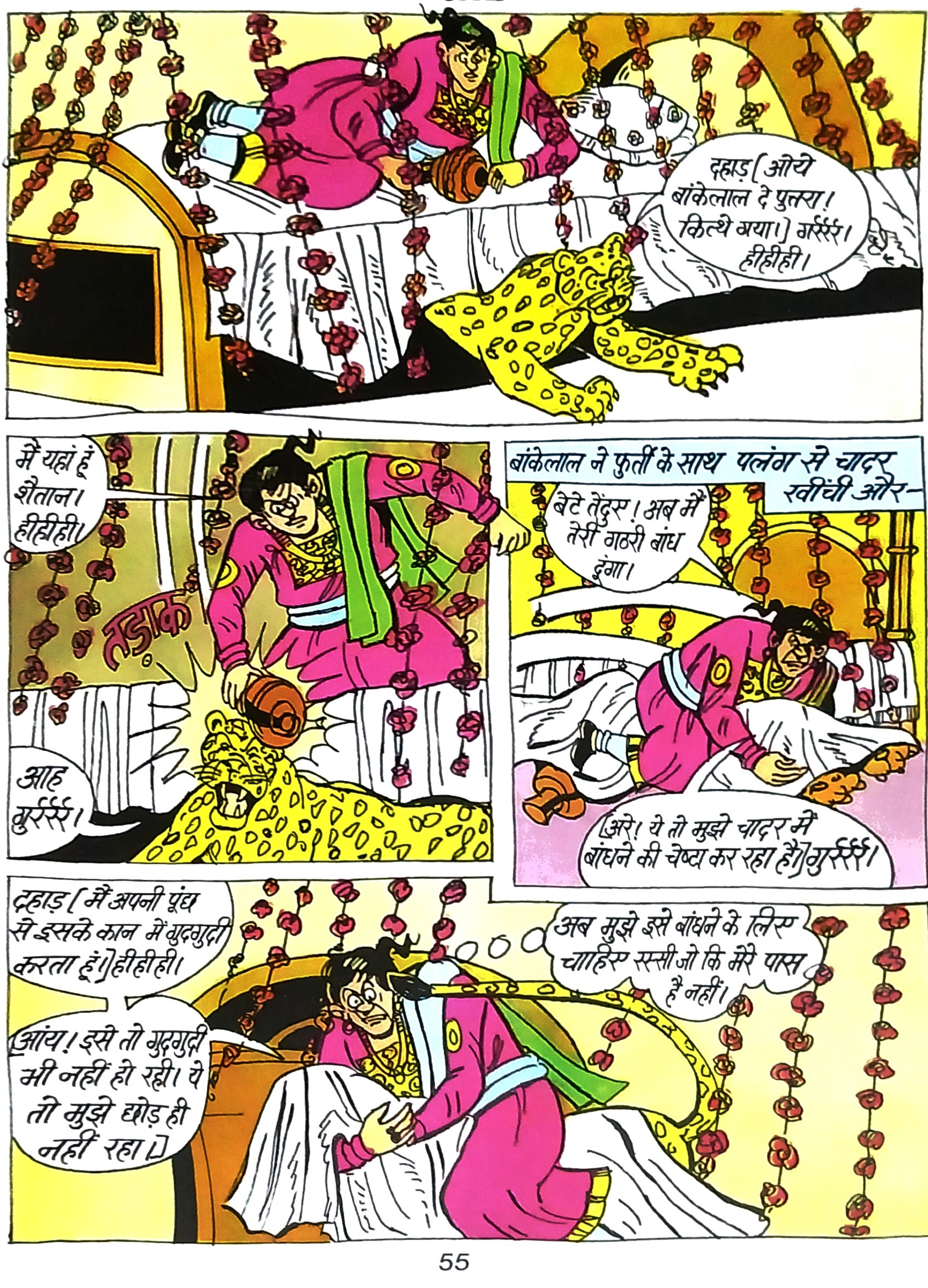

वो मारा पापड़ वाले को। हीहीही।
असली रानी रुपकंवर ये है, जिसके गले में बांकेलालजी ने फूलमाला डाली है। हीहीही।
मैं कुंआरी रहने से बच गई। मुंडा समझदार है हीहीही।
इस प्रतियोगिता में पराजित प्रतियोगियों से दहाड़ू को भोजन करवाने के बाद अपना बोरिया बिस्तर बांधने की चेतावनी दी जाती है। हीहीही।
पर ये दहाड़ू कौन है?
अब कोई भी हो उससे क्या फर्क पड़ता है। प्रतियोगिता तो हम हार ही चुके हैं। बहूहूहू!
जबकि इधर –
मुबारक हो बांकेलाल! पुत्र! मैं इस इलाके का राजगुरु हूं।
तुम्हारा विवाह मुझे ही कराना है। मेरे आदमी तुम्हें दूल्हा बना देंगे। हीहीही।
जी आज्ञा राजगुरु!
जाओ रानी! तुम भी दुल्हन बनने की तैयारी करो।
जी आज्ञा राजगुरु!
रानीजी! एक बार फिर सोच लीजिए। ये आपकी पूरी जिन्दगी का सवाल है। मेरे जैसा टांगें दबाने वाला पति आपको कहीं नहीं मिलेगा बहूहूहू। हीहीही


इस प्रकार रानी रूपकंवर का विवाह बांकेलाल के साथ सम्पन्न हुआ।
ओऽम मंगलम भगवान विष्णु। सौभाग्यशालिनी रानी रूपकंवर एवं श्री मान बांकेलाल जी का विवाह सम्पन्नम नमाय। हीहीही।
सेनापति! बांकेलाल समझदार प्राणी है। मुझे आशा है कि छत्तीसगढ़ का भविष्य बहुत ही उज्जवल होगा।
मुझे भी ऐसी ही आशा करनी चाहिये राजगुरु! मुझे पूरा विश्वास है कि बांकेलाल हमारी रानी को सबक सिखा कर उसे सीधे रास्ते पर ले आयेगा।
उसी रात्रि—
वाह! मेरी योजना का प्रथम चरण तो पूरा हो गया यानी सभी प्रतियोगिताएं जीत कर मैं रानी रूपकंवर से विवाह करने में तो सफल हो गया। हीहीही।
अब अगर रानी मुझे सीधी तरह से राजा बना देती है तो ठीक है वरना रानी को रास्ते से हटा कर विधुर बनने में मुझे भला कितनी देर लगेगी। हीही ही।
आज प्रथम रात्रि पर ही मैं रानी को राजगद्दी छोड़कर विश्राम करने की सलाह दूंगा। हीही ही
बांकेलाल जी! कृपया अंदर जांये। यही है दुलहन का कक्ष। हीहीही।


बांकेलाल दुल्हन के कक्ष में पहुंचा–
कैसी शरमाई सी बैठी है। हीही ही।
रानी सीधी-सादी लगती है। इस पर मेरी धाक जल्दी ही जम जायेगी। हीहीही।
चलो! मोटे मनहूस से पीछा छूटा। हीहीही।
पर अब मैं अपनी दुल्हन का घूंघट हटाता हूं। हीहीही।
फिर बांकेलाल ने जैसे ही घूंघट उठाया कि–
अरे बाप रे ये क्या?
गर्रर्र। (मैं हूं दहाड़ू बांकेलाल हीहीही। मुझे मेरी स्वामिनी ने तेरे बारे में सब कुछ बता दिया है।)
दहाड़ (हीहीही! अब तेरी एक और शादी मेरे पेट में जाकर मृत्यु से होगी। हीहीही।)
ब... बच बेटा बांके! बहूहूहू!

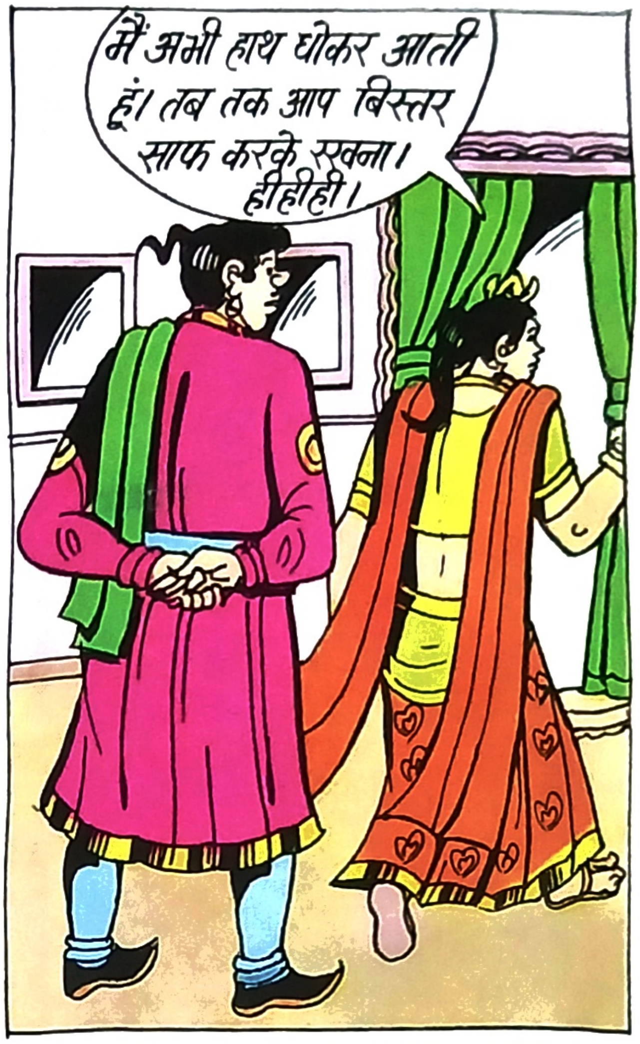


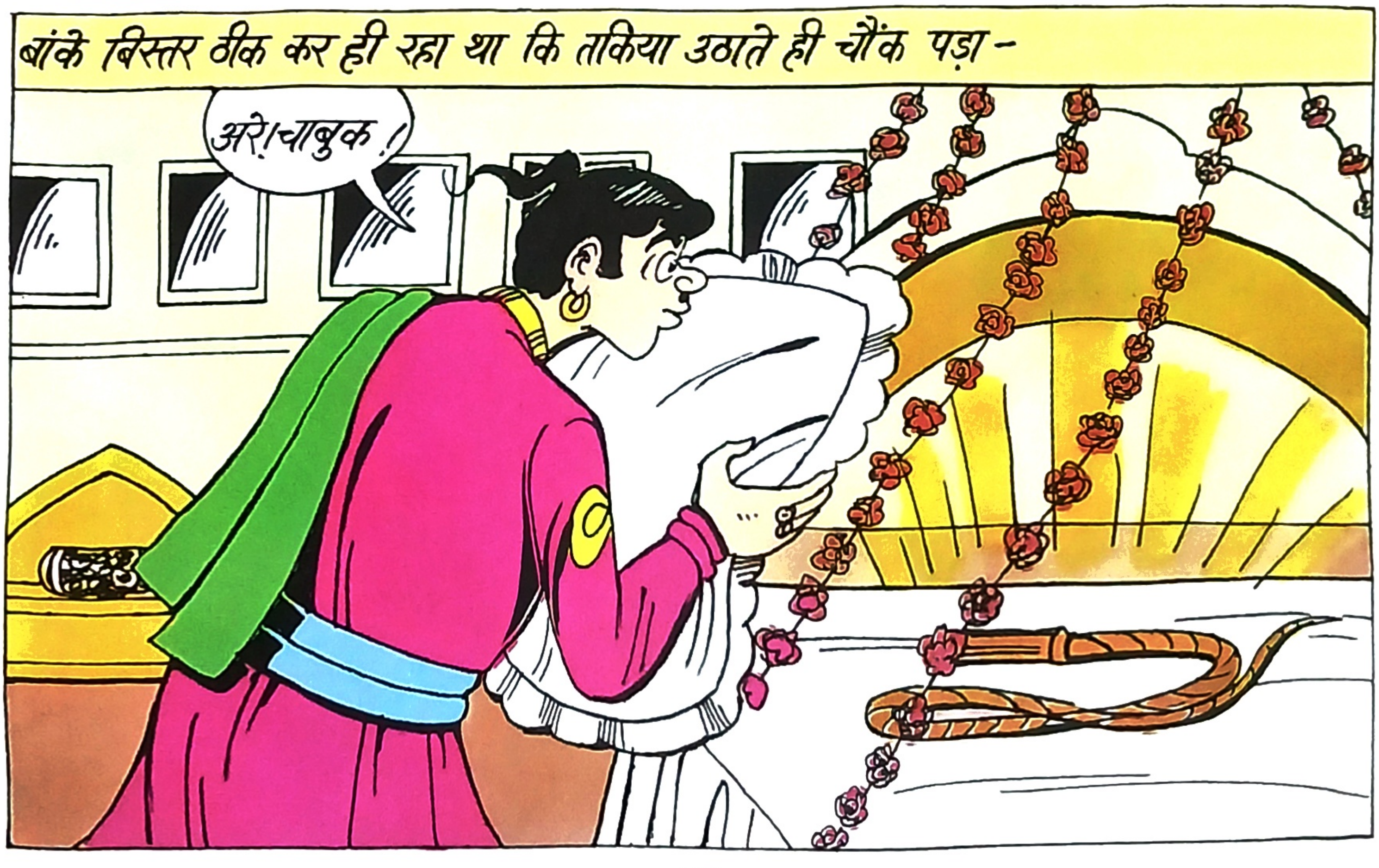
बांके ने बचने के लिए छलांग लगाई—
दहाड़ [ओह! मेरा पहला वार बेकार गया। पर छड्डांगा नहीं।] गर्रर्र।
द...दुल्हन के स्थान पर ये तेंदुआ किसने बिठा दिया। बेटा बांके! ये जरूर उन हारे हुए प्रतियोगियों की कोई चाल होगी।
किंतु अब मुझे इस लड़ाई को भी एक प्रतियोगिता समझ कर जीतना होगा।
इस भारी कुर्सी से मैं इस तेंदुए की खोपड़ी तोड़ दूंगा गर्रर्र। पर ये तो उठ ही नहीं रही। बहूहूहू।
चलो! काठ का ये मूढ़ा ही सही!
थड़
दहाड़ [ओह! ये तो मेरे दांदड़ तोड़ने की कोशिश कर रहा है।] गुर्रर्र।
दांदड़ = दांत।
दहाड़ [मैं ऐन्नू पूरा का पूरा चबा जावांगा।] गुर्रर्र। हीहीही।
बहूहूहू। इस मुसीबत से पीछा कैसे छूटेगा।

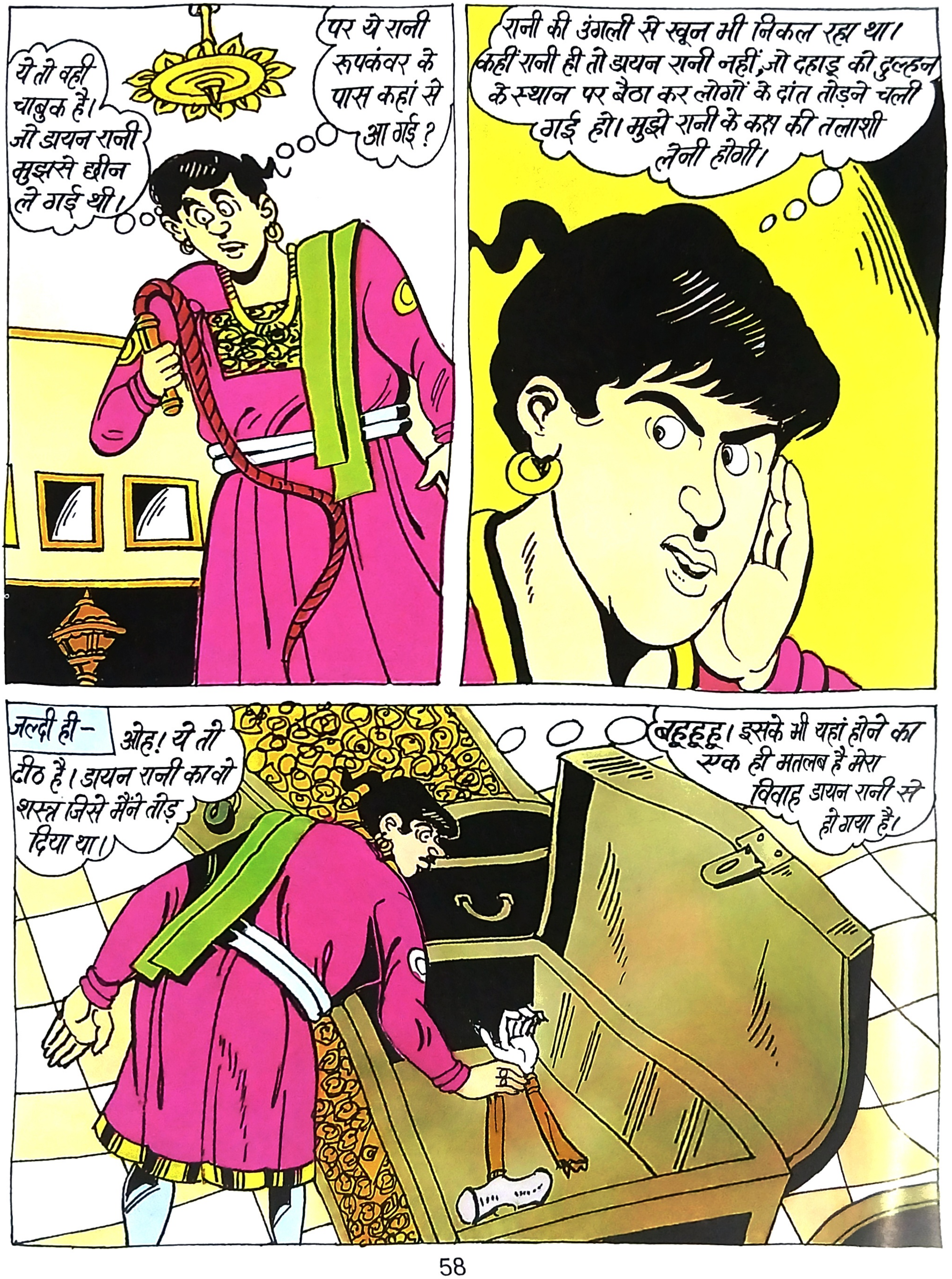

दहाड़ [ओये बांकेलाल दे पुत्तरा! कित्थे गया।] गुर्रर्र। हीहीही।
मैं यहां हूं शैतान। हीहीही।
तड़ाक
आह गुर्रर्र।
बांकेलाल ने फुर्ती के साथ पलंग से चादर खींची और–
बेटे तेंदुए! अब मैं तेरी गठरी बांध दूंगा।
[अरे! ये तो मुझे चादर में बांधने की चेष्टा कर रहा है] गुर्रर्र।
दहाड़ [मैं अपनी पूंछ से इसके कान में गुदगुदी करता हूं।] हीहीही।
अब मुझे इसे बांधने के लिए चाहिए रस्सी जो कि मेरे पास है नहीं।
आंय! इसे तो गुदगुदी भी नहीं हो रही। ये तो मुझे छोड़ ही नहीं रहा।

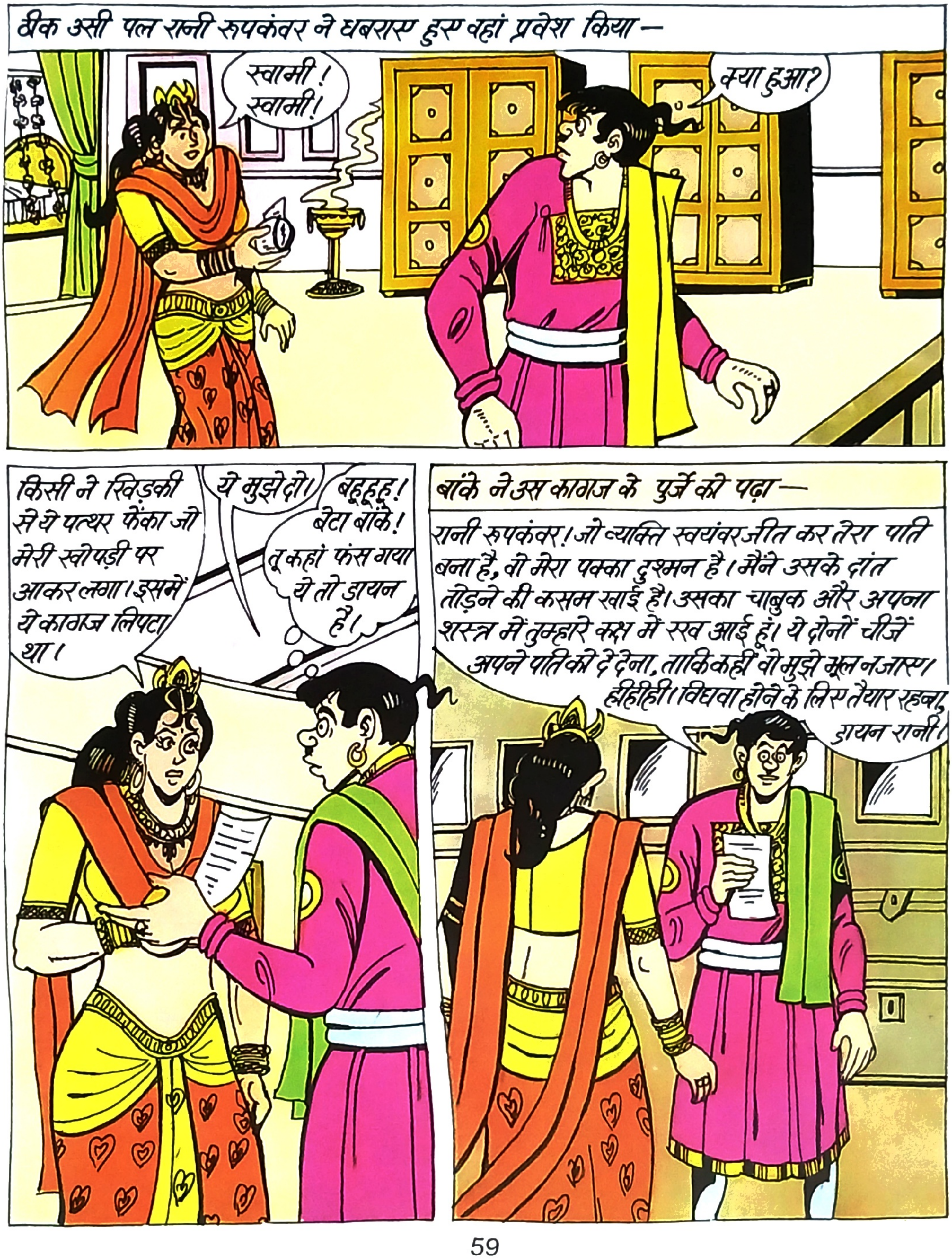

तो फिर बांकेलाल का नाड़ा किस काम आयेगा। हीहीही
अबे क्या करता है। सब कुछ दिखता है।..
...तेरा पाजामा नीचे गिर गया है। बहुहुहु। हीहीही।
फिर द्वार खुला और अंदर आई रानी रूपकंवर -
हीहीही। स्वामी आप कैसे हैं? और मेरा प्यारा मुंह लगा दहाड़ू कहां है?
ओह! तो वो तेंदुआ ही दहाड़ू है।
उसे मैंने छत से टांग दिया है।
आंय! मैं तो समझी थी कि जब मैं अंदर पहुंचूंगी तो अपने होंठों पर जीभ फेर रहा होगा। हीहीही।
दहाड़! ओये! मैन्नू थल्ले उतारो नहीं तो *पास्से भान्न देयांगा।! गुर्रर्र। हीहीही।
*पास्से-हड्डियां तोड़ दूंगा!
स्वामी! दरअसल मैं तो आपकी बहादुरी की परीक्षा ले रही थी। और आप उसमें उत्तीर्ण हो गए। हीहीही।
ओह! किंतु ये क्या रानी?
तुम्हारी उंगली से रक्त क्यों बह रहा है?

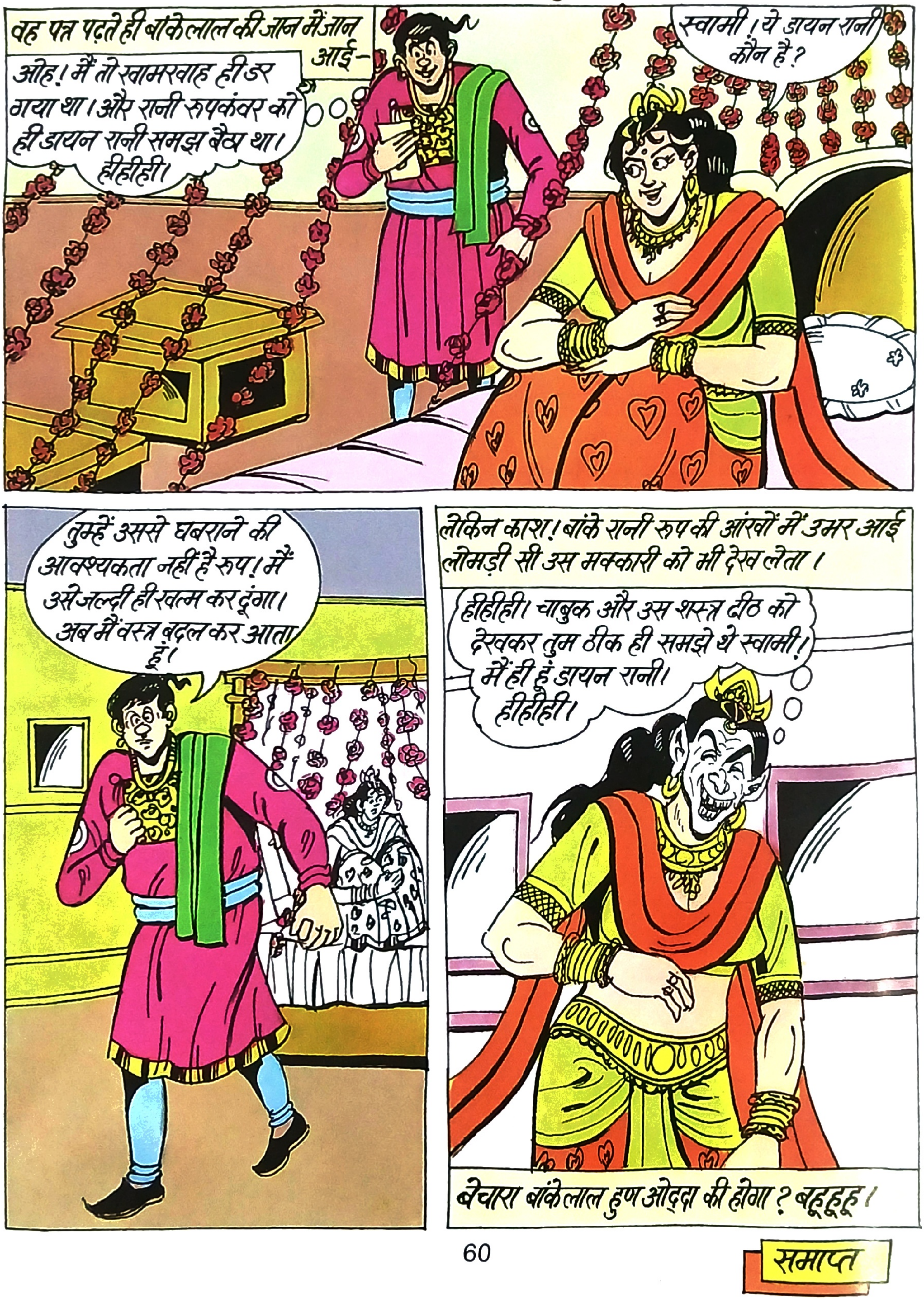

रक्त?
ओह! आपकी दहाड़ से शानदार लड़ाई देखकर मैंने दांतों तले उंगली दबा ली थी इसलिये रक्त निकल आया होगा।


मैं अभी हाथ धोकर आती हूं। तब तक आप बिस्तर साफ करके रखना। हीहीही।


बांके बिस्तर ठीक कर ही रहा था कि तकिया उठाते ही चौंक पड़ा -
अरे! चाबुक!


ये तो वही चाबुक है। जो डायन रानी मुझसे छीन ले गई थी।
पर ये रानी रूपकंवर के पास कहां से आ गई ?
रानी की उंगली से खून भी निकल रहा था। कहीं रानी ही तो डायन रानी नहीं, जो दहाड़ की दुल्हन के स्थान पर बैठा कर लोगों के दांत तोड़ने चली गई हो। मुझे रानी के कक्ष की तलाशी लेनी होगी।
जल्दी ही–
ओह! ये तो दीठ है। डायन रानी का वो शस्त्र जिसे मैंने तोड़ दिया था।
बहुहुहु। इसके भी यहां होने का एक ही मतलब है मेरा विवाह डायन रानी से हो गया है।


ठीक उसी पल रानी रुपकंवर ने घबराए हुए वहां प्रवेश किया —
स्वामी! स्वामी!
क्या हुआ?
किसी ने खिड़की से ये पत्थर फेंका जो मेरी खोपड़ी पर आकर लगा। इसमें ये कागज लिपटा था।
ये मुझे दो।
बहूहूहू! बेटा बांके! तू कहां फंस गया ये तो डायन है।
बांके ने उस कागज के पुर्जे को पढ़ा —
रानी रुपकंवर! जो व्यक्ति स्वयंवर जीत कर तेरा पति बना है, वो मेरा पक्का दुश्मन है। मैंने उसके दांत तोड़ने की कसम खाई है। उसका चाबुक और अपना शस्त्र मैं तुम्हारे कक्ष में रख आई हूं। ये दोनों चीजें अपने पति को दे देना, ताकि कहीं वो मुझे भूल न जाए। हीहीही। विधवा होने के लिए तैयार रहना, डायन रानी।


वह पत्र पढ़ते ही बांकेलाल की जान में जान आई–
ओह! मैं तो खामखवाह ही डर गया था। और रानी रूपकंवर को ही डायन रानी समझ बैठा था। हीहीही।
स्वामी! ये डायन रानी कौन है?
तुम्हें उससे घबराने की आवश्यकता नहीं है रूप! मैं उसे जल्दी ही खत्म कर दूंगा। अब मैं वस्त्र बदल कर आता हूं!
लेकिन काश! बांके रानी रूप की आंखों में उभर आई लोमड़ी सी उस मक्कारी को भी देख लेता।
हीहीही। चाबुक और उस शस्त्र दीठ को देखकर तुम ठीक ही समझे थे स्वामी! मैं ही हूं डायन रानी। हीहीही।
बेचारा बांकेलाल हुण ओद्दा की होगा? बहूहूहू।

समाप्त

GREEN PAGE-114

प्रिय मित्रो, नमस्कार!

आखिर हो ही गया। हां, हो ही गया बांकेलाल का सपना पूरा। राजा भी बन गया और विवाह भी हो गया, लेकिन हाय री बांकेलाल की फूटी किस्मत राजा भी बना तो राज सिंहासन नहीं बल्कि उसे मिला चरणासन और विवाह भी हुआ तो किससे हीहीही डायन रानी से। लम्बे-लम्बे तीखे दांतों वाली डायन रानी जिसे चाहिए पूरे छत्तीस दांतों का जबड़ा। अब बताओ भला क्या भला हुआ बांकेलाल का, घर से भी गया और घाट से भी। विशालगढ़ था तो कम से कम मोटे मुच्छड़ को यमलोक पहुंचाकर सिंहासन प्राप्त करने की आस तो थी यहां तो खुद ही जान के लाले पड़े हुए हैं। और ऊपर से दहाडू बाप रे बाप! क्या तो दिमागी चाल चलेगा और क्या अपने कदमों की चाल चलेगा। आगे कुआं पीछे खाई। विक्रमसिंह गले लगाकर मोटे होंठों से पप्पी लेता था तो सीकड़ी बांकेलाल कहता था, 'अबे बदबूदार मुंह पीछे कर।' अब जब डायन रानी पप्पी लेगी तो वो कैसी होगी बदबूदार या कांटेदार या दोनों ही।

चलो खैर, अब क्या होता है? बांके क्या करता है, मरता है या बचता है यह तो हमें आगे की कॉमिकों में ही पता चलेगा जो कि हैं **शैतान का जादू, दुष्टयंती, डायनरानी** और **कबाड़ा**। हां, इन चार कॉमिकों के सफर के बाद नाक में दम करके और अपनी नाक में दम कराकर बांकेलाल बनने चलेगा **'छत्रपति बांकेलाल'** और तब कहीं जाकर पहुंचेगा अपने मुच्छड़ मनहूस के पास। जी हां, अगले विशेषांक **छत्रपति बांकेलाल** में। तो फिर तब तक आप आनंद लें डायनरानी दुष्टयंती व बांकेलाल की इन हास्य कॉमिकों का। **छत्रपति बांकेलाल** मई 2000 में प्रकाशित होगी तब तक के लिए विदा और हां, पत्र द्वारा अपने सुझाव जरूर-जरूर भेजें, जिससे कि आपके हास्यप्रद सुझावों को पढ़कर हम भी थोड़ी हीहीही कर सकें।

पत्रव्यवहार इस पते पर करें: **ग्रीन पेज-114, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84.**


बेटी यह किस फटीचर को मेरा दामाद बना दिया? इसे धक्के मारकर महल से बाहर करो।
यह कैसा कीड़े पड़ा ससुर है जो दामाद को लात मारकर भगा रहा है?
कैसे दुष्ट पिता हो तुम जो अपनी बेटी को विधवा बनाना चाहते हो।
-बेदी
शैतान का जादू
मूल्यः 10/-
राज कॉमिक्स में हास्य सम्राट बांकेलाल का मनोरंजक कॉमिक

बांकेलाल



हास्य सम्राट बांकेलाल!
उसका डेढ़ पसली बदन, सिर पर लम्बा बोदी वाला एंटीना, और सामने के निकले दो दांत ही उसके षड्यंत्रकारी दिमाग में चल रही खुराफातों को उजागर कर देते हैं।
सदियों से ही उसका बस एक ही सपना है, किसी तरह विशालगढ़ के महाराज विक्रम सिंह को रास्ते से हटाकर खुद राजा बनना। मगर, एक श्राप के कारण, वो जिसका भी बुरा करने निकलता है, उसका भला ही हो जाता है। नित नई योजना बनाता बांकेलाल न चाह कर भी हर मुश्किल हल करके बन जाता है सबका प्यारा बांकेलाल।



प्रिय दोस्तों,
1986 में राज कॉमिक्स की स्थापना के बाद से आज तक आप सभी का जो अटूट प्रेम मिला, साथ मिला, उसके लिए हम हृदय से आपके सदा आभारी हैं।
आपका,
मनोज गुप्ता

ISBN 978-93-324-0817-3
9 789332 408173
₹200.00
www.rajcomics.ne